सुघड़ दर्जिन

अर्थात
बालिकाओं के लिये सीने पिरोने, काढ़ने
और कपड़े काटने छाटने इत्यादि की
सीधी रीतियों का वर्णन ।
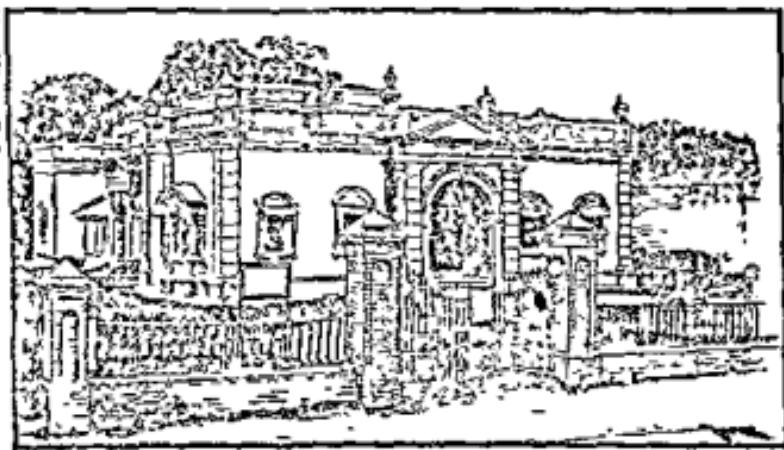
ठाकुर प्रसाद खत्री

[देशी करघा, सोनारी, हमारी प्राचीन ज्योतिष,
लखनऊ की नवाबी इत्यादि इत्यादि ग्रंथों के कर्ता]

लिखित

और

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ।

1908

Printed by Madho Prasad, at the Bharat Press, Benares.

मूल्य ।॥)

२२६

प्रस्तावना।

—:o:o:—

आज कल स्त्री शिक्षा की बड़ी धूम है और इस पर बड़ा जोर दिया जा रहा है। ऐसा होना भी चाहिए क्योंकि यदि स्त्रियों को यथायोग्य शिक्षा दी जाय जिससे कि घर गृहस्थी के कामों में वे चतुर और सुघड़ हो जांय तो मानों सोना और सुगंध हो जाय, इसमें किस को विरोध हो सकता है। पर अब प्रश्न यह होता है कि हिन्दुस्तानी स्त्रियों के लिये कैसी शिक्षा उपयोगी है? हिन्दुस्तानी मति के अनुसार विद्यालाभ के दो अर्थ हैं-एक तो पारमार्थिक और दूसरा व्यावहारिक। इस ग्रंथ का उद्देश केवल उस विद्या के सम्बन्ध में है जिसके द्वारा स्त्रियां घर गृहस्थी के व्यवहार में सुलक्षणा होकर आदरणीय होजांय। इस उद्देश्य पर ध्यान रखकर यदि देखा जाय तो हिन्दुस्तानी स्त्रियों को सब से अधिक काम भोजन बनाने अर्थात् पाक शास्त्र और कपड़े सीने अर्थात् सीने परोने का पड़ता है। इसलिये ये दोनों विद्याएं उनके लिये सब से अधिक उपयोगी और आवश्यक हैं। इस ग्रंथ में हम सीने पिरोने के विषय में ही लिखा चाहते हैं।

सीने और कपड़ों की काट छांट की गिनती विद्या में इस लिये की जासकती है कि इसमें कारीगरी, सुघड़ता, हिसाब, नाप जोख और सुन्दरता लाने में बुद्धि का काम पड़ता है। यों तो सीना पिरोना सभी स्त्रियां कुछ न कुछ जानती हैं पर कपड़े की ठीक ठीक काट छांट, सिलल

मरम्मत और सिलाई की सफ़ाई सहज नहीं है। वही स्त्री प्रशंसा योग्य होती है जिसमें ये गुण हों। विशेष करके गृहस्थ स्त्रियों के लिये तो किफ़ायत के साथ कपड़े को काट छांट करके अपने और बालकों के कपड़े उत्तमता के साथ सीना अत्यावश्यक है।

यह कहा जा सकता है कि अब तो सीने की मेशीन अर्थात् कल चल गई है तो फिर हाथ की सिलाई पर किसी ग्रंथ का लिखना व्यर्थ है। पर सोचने से यह बात पाई जाती है कि मेशीन होने पर भी सैंकड़ों काम सिलाई के ऐसे हैं जो बिना हाथ की सिलाई के नहीं हो सकते। हाथ की सिलाई मानो मूल विद्या है। इसके अतिरिक्त मेशीन की सिलाई से उत्तम कपड़े छिज जाते हैं। सस्ती मेशीन का काम न तो साफ़ होता है और न उसकी सिलाई ही मज़बूत होती है। इसके सिवाय सीने की उत्तम कल अधिक दाम की मिलती है जिसे सर्व साधारण लोग नहीं ले सकते और उसको रखने और उससे काम लेने में भी बुद्धि का काम पड़ता है। अतएव हाथ की सिलाई बड़े काम की विद्या है।

परमेश्वर ने इन हाथों की दसो उंगलियों में ही धन सम्पत्ति और सुघड़ता को सिरजा है, जिसकी सम्पत्ति आजीवन घटती नहीं। इन्हीं उंगलियों की कारीगरी कुसमय आन पड़ने पर काम देती है। जिन लोगों को कोई भी हाथ की कारीगरी आती होगी वे कभी किसी के मुहताज न रह सकेंगे।

स्त्रियों के लिये सिलाई सब से बढ़कर काम की चीज़ है,—इससे इनका हाथ स्थिर, मजबूत और साफ हो जाता है, आंखों में सफाई और दस्तकारी की कदर आ जाती है। जिस घर में ऐसी चतुर और सुलक्षणा स्त्री होती है उस घर में उसका बड़ा सम्मान होता है, अपनी सहेलियों में वह सुघड़ कहलाती है और अपने बांधवों के गौरव का कारण होती है। जिस घर की स्त्री सिजिल सीना, खोंच लगे कपड़ों की मरम्मत और छोटे मोटे छिद्रों का रफू कर लेना जानती है उस घर में कितनी किफायत हो सकती है यह आप लोग स्वयं समझ सकते हैं।

इस लिये लड़कियों को सिलाई और सूई के काम की विद्या ज़रूर पढ़ानी चाहिए। केवल लड़कियां ही नहीं किन्तु लड़के भी इसे सीख कर उत्तम दरज़ी का काम कर सकते हैं। इसी उद्देश से यह छोटा सा ग्रन्थ हिन्दी में पहिली ही बेर लिखा जाता है। यदि हमारे हिन्दुस्तानी भाइयों ने इसे पसंद किया तो मैं सूई के और भी कामों पर ग्रन्थ लिख कर आप लोगों की सेवा में उपस्थित करूंगा।

यह अपने ढंग की पहिली ही पुस्तक है यदि कोई बात भूल चूक से छूट गई हो अथवा कहीं अशुद्धियां हों तो दयालु पाठकगण क्षमा करेंगे और उसकी सूचना देकर मुझे कृतार्थ करेंगे कि जिसमें इसके दूसरे संस्करण में वे सुधार दी जांय।

हमारे संयुक्त प्रदेश में आज कल स्त्री शिक्षा पर गवर्नमेंट का भी बहुत ध्यान है। लड़कियों की पाठ-

शालाओं में जो जो विद्याएं सिखाने का विचार किया गया उनमें सीना पिरोना भी एक है, पर इस विषय की को अच्छी पुस्तक न होने से बड़ी दिक्कत पड़ रही है। आश है कि इस ग्रन्थ से इस अभाव की पूर्ति हो जाय।

काशी
२३-५-०८. } ठाकुरप्रसाद खत्री।

---:o:---

अध्याय सूची ।

॥

सुघड़ दरज़िन ।

पहिला अध्याय ।

सिलाई ।

सिलाई की विद्या बहुत प्राचीन काल से चली आती है। जब से मनुष्य ने अपना अंग ढांकना और कपड़े बनाना सीखा, तभी से सीने की विद्या का प्रचार है। फटे कपड़े या कपड़ों के कई टुकड़ों को आपस में सूई तागे द्वारा जोड़ देने को 'सीना' कहते हैं। सिलाई में जिन जिन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है पहिले हम उन्हीं का वर्णन करते हैं। सूई, तागा, कैंची, अंगुश्ताना और गज़ सब से ज़्यादा ज़रूरी चीज़ें हैं। इन सब चीज़ों को एक बुकची में सम्हाल कर एक जगह रखना चाहिए कि जिसमें जिस समय जिस चीज़ का काम पड़े वह तुरत मिल जाय।

सूई ।

[१] सूई—यह पक्के लोहे की बनी हुई छोटी, बड़ी, महीन और मोटी कई प्रकार की सलाई होती है जिसके द्वारा कपड़ों के बीच में तागा डाल कर कपड़ों को सी देते हैं। सूई का एक सिरा नोकीला होता है, इसे सूई का 'नोक' कहते हैं, और दूसरा सिरा कुछ मोटा और गोल या चपटा

होता है, जिसमें एक छेद तागा परोने या अटकाने के बना रहता है, इसे सूई का 'नक्का' कहते हैं।

ये सुइयां अब विदेश से ही बनकर आती हैं। पहिले ये हिन्दुस्तान में बहुत बना करती थीं, विलायत में सुइयां नहीं बनती थीं और न वहांवाले इनका बनाना ही जानते थे। विलायत में सब से पहिले सूई बनाने का कारखाना एक हिन्दुस्तानी ही ने सन् १५४५ में खोला था। इसी से सीख कर इसके मरने बाद सन् १५६० में सूई का कारखाना विलायत में पहिले पहिल खोला गया*।

सूइयां बड़ी से बड़ी नं० १ से छोटी से छोटी नं० २५ तक की होती हैं। इनमें भी नं० ५ से नं० १२ तक की सूइयां प्राय: कपड़े सीने के काम में आती हैं, इन्हें अवश्य रखना चाहिए। जो सूई साफ़, चमकदार और ज़रा कड़ी हो अर्थात् जो ज़ोर लगाने पर टूटे नहीं वह सूई उत्तम गिनी जाती है और जिस पर मोरचा लगा हो या जो मोड़ने से मुड़ जाय, किंवा टेढ़ी हो जाय, वह घटिया समझी जाती है। जो सूई सीधी होती है उसकी सिलाई सिजल आती है और टेढ़ी सूई की सिलाई टेढ़ेमेढ़ी हो जायगी। सूइयों में मोरचा जल्द लग जाया करता है, इसलिसे सूई की पुड़िया वा उसके पैकेट में खिलखड़ी महीन पीस कर बुरक दे और

---

* Needles were first made in England by a native of India in 1545 A. D, but the art was lost at his death. It was however recovered by Christopher Greening in 1560 A. D, who was settled............in Bucks, where the manufactory has been carried on from that time to the present day. [Encyclopaedia Brittanica, Vol XIV, 5th Edit'o1 of 1815]

जहां तक हो सके सूइयों को सिलायी जगह में न रक्खे, अथवा गीले या पसीने के हाथ से बहुत न छूए। यदि हाथ पसीजता हो तो पिसी सिलखड़ी की बुकनी उंगलियों पर मल ले कि जिसमें सूई पर गीलापन न लगे।

कैंची।

[२] कैंची–यह कपड़ा कतरने के लिये बहुत ज़रूरी है। कम से कम दो प्रकार की कैंचियां अवश्य रखनी चाहिएं, एक तो छोटी जिसके दोनों 'फल' नोकीले और पतले हों और दूसरी बड़ी जिसका एक फल नोकीला और दूसरा फल चौड़ा हो। कैंची के फलों के दूसरे सिरों पर उंगली डालने के लिये जो छेद होते हैं वे ऐसे छोटे न हों कि उंगलियों पर गड़ें, इसलिये वे गोल और ढीले होने चाहिएं।

अंगुश्ताना।

[३] अंगुश्ताना–यह लोहे का ही उत्तम होता है। यह पिछली उंगलियों के सिरे पर इसलिये पहिना जाता है कि कड़े, मोटे या संगीन कपड़ों में बलपूर्वक सूई डालने से सूई की नोक उंगली में न चुभे और सूई के पिछले सिरे को अंगुश्ताने से अड़ाकर सूई को दूसरी ओर डाल देने में सुभीता हो।

धागा।

[३] तागा या धागा–रूई को कात कर सूत बनाते हैं और फिर इन्हीं सूतों को दोहरा या तिहरा बट कर ही धागा बनाया जाता है। इसके सिवाय ऊन या रेशम के भी धागे होते हैं। सूई के नकुए के छेद में धागा डालने को

'परोना' या 'पोनो' कहते हैं। सूई में धागा परोकर और सूई द्वारा कपड़ों में डाल कर ही कपड़ों को सीते हैं।

पूर्व काल में यह सूत हिन्दुस्तान में घर घर काता जाता था, घर घर चरखे चला करते थे और इतना महीन सूत काता जाता था कि उससे ढाके की मशहूर महीन मलमल बिनी जाती थी, जिसकी बराबरी आज कल के बने सूत अब तक नहीं कर सकते। इन सूतों के कपड़े भी ज़्यादा मज़बूत और चलाऊ होते थे।

अब जो सूत की पेचकें या ताश आती हैं वे कई रंग और किस्म की होती हैं। इनके टिकट भी कई भांति के होते हैं और उन पर धागों के किस्म के नम्बर दिए होते हैं। महीन, मोटे, कम बटे वा ज़्यादा बटे धागों के अनुसार उनके नम्बर होते हैं और इनका व्यवहार भी जुदे जुदे कामों के लिये किया जाता है।

गज़।

[५] गज़— कपड़े नापने के लिये यह एक प्रकार का मान है। यह फ़ीते या लोहे वा काठ का बनाया जाता है। बज़ाज़ लोग कपड़े नापने के लिये लोहे का गज़ रखते हैं और दरज़ी लोग फ़ीते का गज़ रखते हैं। हिन्दुस्तानी गज़ १६ गिरह का होता है और अंग्रेज़ी गज़ ३६ इञ्च का होता है। हिन्दुस्तानी एक गिरह लगभग सवा दो इञ्च के बराबर होती है। आज कल जो पैसा चलता है उसकी चौड़ाई ठीक १ इञ्च की है। सीने पोने के काम के लिये फ़ीते का ही गज़ बना रखने में सुभीता होता है।

अंग्रेज़ी नाप	हिन्दुस्तानी नाप
१२ इंच = १ फुट	
३६ इंच = ३ फुट = १ गज़	१६ गिरह = १ गज़

सूई परोना ।

सूई के नक्के के छेद में धागा डालने को ही 'परोना' कहते हैं, यह हम ऊपर लिख आए हैं। सूई परोना उतना सहज नहीं है जितना समझा जाता है, विशेष करके लड़कियों के लिये। इसलिये सब से पहिले उन्हें सूई परोने का अभ्यास करा देना चाहिए।

रीति—लड़कियों को पहिले यह बताना चाहिए कि बांए हाथ के अँगूठे और अनामिका [बड़ी उंगली] में सूई को वे इस तरह पकड़ें कि उसका नक्का ऊपर को उठा रहे और बाक़ी तीन उंगलियां हथेली पर मिची रहें।

इसी प्रकार फिर यह सिखावे कि दहिने हाथ के अँगूठे और अनामिका उंगली से धागे को उसके सिरे के निकट थामें। लड़कियों को यह भी बता दे कि सूत के सिरे की नोक पर कभी कभी उसके फुसड़े फैले रहते हैं, इसलिये वे सूई के महीन छेद में नहीं घुस सकते और इधर उधर अटक कर रुक जाते हैं। इसलिये ऐसी अवस्था में धागे के सिरे को अँगूठे और उंगली के बीच में नरमी के साथ थाम कर बट दें। यह बट उसी ओर दें जिस ओर की बट धागे में पहिले से पड़े हैं। उलटा बट देने से धागे का बट और भी खुल जायगा और उसके फुसड़े फैल जांयगे। ऊपर लिखे अनुसार सीधा बट देने से फुसड़े आपस में चिपक कर बटुर जांयगे

और सिरा भी करारा और नोकीला हो जायगा। अब इस बटे और करारे सिरे को सूई के छेद के बीच में डालने के लिये उसके ठीक साम्हने ले जाय और धीरे से धागे के सिरे की नोक सूई के छेद में डाल दे। महीन नक्के में धागा डालते समय लड़कियों का हाथ कांप कर पहिले इधर उधर बहकेगा, पर दिलासा देकर कई बेर अभ्यास कराने से यह कठनाई दूर हो जायगी।

इतना कर चुकनेपर धागेके एक दम छोड़ न दे, नहीं तो धागा अपने ही बोझ से बाहर निकल आवेगा। इसलिये यह करे कि बांए हाथ की मिची उंगलियों को फैला कर उसमें धागे को पकड़ रक्खे और दहिने हाथ के अँगूठे और अनामिका से धागे के निकले हुए सिरे को पकड़ कर खींच ले (याद रक्खे कि धागे की मोटाई से सूई का छेद कुछ बड़ा होना चाहिए)। जब धागा परो ले तब धागे को दे। तीन बालिश्त के बराबर पेचक से खोल कर कैंची से काट ले। लड़कियों को बता दे कि वे धागे को कभी भी खींचकर न तोड़ें। ऐसा करने से एक तो धागा खिंच करकमज़ोर हो जाता है, दूसरे उसका बट ढीला हो जाता है और तीसरे धागे के सिरे पर ज्यादा फुसड़े निकल आते हैं।

अब लड़कियों को धागा परोने का खूब अभ्यास हो जाय, तब उन्हें अंगुश्ताना पहिनना और उसका इस्तेमाल बतावे। उन्हें बतावे कि किस तरह अगुश्तानों को दहिने हाथ की बिचली उंगली के सिरे पर पहिने और क्योंकर कपड़े को बांए हाथ पर रक्खे और क्योंकर अँगूठे और कानी उंगली से कपड़े को ताने रहे। सीने के स्थान को

अनामिका के नाखून पर रक्खे कि जिसमें सूई की नोक यदि गड़े भी तो नाखून पर ।

चित्र नं० १

कपड़े को नाखून पर रखकर सीना ।
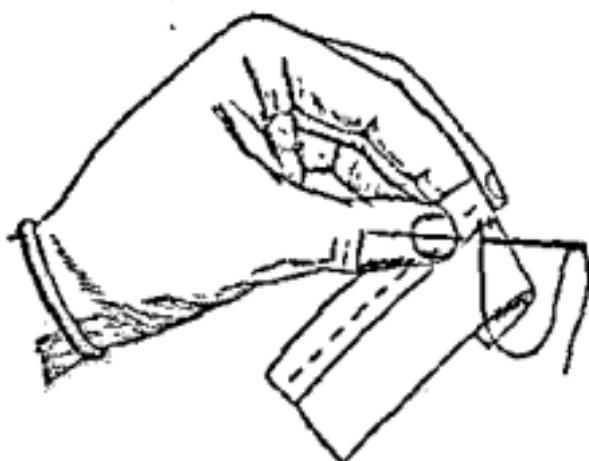
दहिने हाथ से परोई हुई सूई को थाम कर सूई की नोक इस तरह तिरछी कपड़े में डाले कि सूई की नोक बांए हाथ में न चुभे और कपड़े के तीन, चार वा पांच
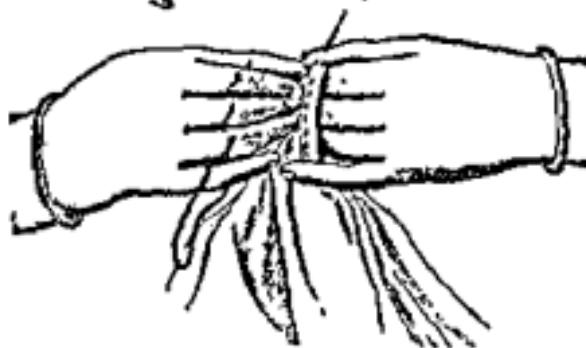
चित्र नं० २

कपड़ा हाथ पर रखना और अंगुश्ताने से सूई डालना ।

सूतों के नीचे से होकर कपड़े के दूसरी ओर निकल आवे । अब अंगुश्ताने को सूई के नक्के के सिरे पर अटका वा दबा

पर उसके बगल से टांके भरती जाये । यदि कपड़े में घेड़ी सिलाई करनी हो अथवा कपड़ा ही आड़ा काटा गया हो तो सीधी सिलाई करने के लिये किसी रंगीन सूत से टांके दूर दूर एक सीध में भर जाय और उसीकी सीध में सिलाई कर जाय, फिर लंगर के सूत को निकाल डाले । दूर दूर सीधे टांके भरने को 'लंगर' डालना कहते हैं ।

(३) समदूरी–इसका तात्पर्य यह है कि जितने सूत छोड़ कर सूई बाहर निकाले उतने ही सूत बराबर छोड़ छोड़ कर सूत के टांके भरे, इसीका ध्यान रखने से सिलाई में सिन्नलता और सुन्दरता आती है ।

यह याद रहे कि प्रायः कपड़ों को उलटी ही ओर से सीते हैं । कोई कोई सिलाई कपड़े के सीधी ओर से भी की जाती है । इसका वर्णन अपने अपने मौक़े पर कर दिया जायगा ।

दूसरा अध्याय ।

सिलाई ।

यद्यपि सिलाई में सभी प्रकार के सूई के काम, जैसे सीना, रफ़ू करना, मरम्मत करना, कसीदा काढ़ना, ज़रदोज़ी इत्यादि समझे जाते हैं, परन्तु हम पहिले सादी सिलाई के विषय में ही लिखते हैं । याद रहे कि सिलाई दो प्रकार की होती है (१) सादी और (२) हुनर की ।

परोई हुई सूई को कपड़े में से डाल कर कुछ दूर पर निकालना और फिर सूई को कुछ दूर पर डाल कर आगे

निकालना और इसी प्रकार सूई में परोए हुए धागे से कप को नढ़ते जाने को 'तोपे भरना' वा 'टांके लगाना' कह हैं। सादी सिलाई में चार मुख्य प्रकार के टांके होते हैं (१) पसूज, (२) बखिया, (३) तुरपन और (४) ओरमा।

(१) पसूज।

यह सब प्रकार की सिलाइयों से सहज और सीधी है इस सिलाई में सूई को बेड़ी (लगभग पसरी हुई) या कर कपड़े के सूतों में इस तरह डाले कि दो दो या ती तीन सूतों के नीचे से होकर सूई ऊपर को बाहर निक और दो दो या तीन तीन सूतों के ऊपर से होकर सू अन्दर (नीचे) को बाहर निकले और फिर दो दो या तीन तीन सूतों के नीचे से होकर सूई डाली जाय। इसी तरह

चित्र नं०१ – पसूज।
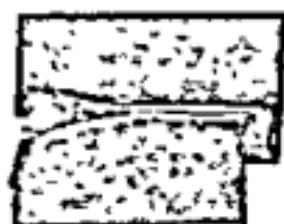
बराबर सीती जाय–इस सिलाई का नाम 'पसूज' या 'लपकी' है। इसी सिलाई में यदि अधिक दूर दूर पर सूई डाली जाय तो उसे 'लंगर' डालना कहते हैं। कपड़े सीने के लिये दो कपड़ों को जिस तरह सीना होता है उन्हें उसी तरह एक दूसरे के साथ लगा कर या जमा कर लंगर डाल देते हैं कि जिसमें कपड़ा खिसक कर टेढ़ा मेढ़ा न होजाय।

जब लड़कियों को पसूज की सिलाई में कुछ कुछ अभ्यास हो जाय, तब उनको यह बतावे कि एक ही बेर में सूई के कई टांके भी समान दूरी पर लग सकते हैं। इस बात को इस रीति से सिखावे कि सूई के नोके अर्थात् उसके अगले को दो दो या तीन तीन सूतों के नीचे से लेता कर बेवड़

उसके अगले भाग के ऊपर निकाले और सूई को बिना पूरी तरह निकाले ही फिर उसे आगे दो दो वा तीन तीन सूतों के ऊपर से डाले और इसी प्रकार कई टांके दिए जाय, जब तक कि सूई की पूरी लम्बाई कपड़े में न समा जाय । इसके बाद सूई का सिरा थाम कर और सूई को पीछे से अंगुश्ताने का सहारा देकर उसको खींच ले । [चित्र नं० ४ देखो ।

इसी प्रकार करने से एक ही बेर में कई टांके पसूज के पड़ सकते हैं । यह सिलाई सब से ज़्यादा सहज है और फ़ीता लगाने वा झालर टांकने के काम में लाई जाती है ।

चित्र नं० ४
एक साथ कई तोपे ।

(२) बखिया ।

बखिये की सिलाई अधिक मज़बूत और सुन्दर होती है । इस सिलाई में सूई कपड़े में से आगे निकाल कर फिर पीछे लौट कर टांके आगे को देते जाते हैं । बखिया दो प्रकार की होती है (क) दौड़ की बखिया (ख) पोस्तदाना वा गठी बखिया ।

(क) दौड़ की बखिया—इस बखिया में जितने सूतों के नीचे से सूई लेजाकर बाहर निकालते हैं, उनके आधे सूतों के ऊपर से पीछे लौट कर फिर सूई डालते हैं और फिर उतने ही सूतों के आगे नीचे से लेजाकर सूई को बाहर निकालते हैं कि जितने सूतों के नीचे से पहिले सूई ऊपर को निकाली गई थी । मान लो कि कपड़े के ६ सूतों के नीचे से सूई बाहर निकाली गई है, तो अब जहां पर सूई निकाली गई है वहां से पीछे के तीन सूतों पर से सूई लौटा कर फिर सूई कपड़े
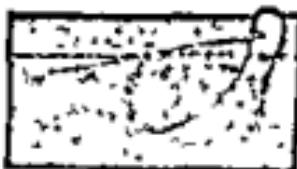
में डालते हैं और पुन: सिलाई के आगे के ६ सूतों के बाद सूई ऊपर को निकाली जाती है और फिर सूई को पिछले तीन सूतों पर से लौटा कर टांके भरते हैं यह सिलाई मज़बूत होती है। यदि बीच के टांके का कोई धागा टूट भी जाय तो सिलाई

चित्र नं० ५

दौड़ की बखिया। उधड़ नहीं सकती। यह सिलाई कपड़े के सीधे पल्ले पर की जाती है। सीधी ओर यह सिलाई एकहरी होती है पर उलटी ओर कुछ एकहरी और कुछ दोहरी होती है। [चित्र नं० ५ देखो।

यह सिलाई जितनी ही महीन होगी और जितनी ही सम दूरी पर इसकेटांके होंगे उतनीही भली मालूम होगी। यह सिलाई खूब सीधी हो, नहीं तो इसकी सुन्दरता जाती रहेगी। कपड़े के सूत गिन गिन कर टांके डालने का पहिले अभ्यास करे तो सिजल और एक समान टांके देने आजायंगे। सीधी सिलाई करने के लिये ध्यान करके कपड़े के एकही सूत की सीध में सीती जाय। यदि कपड़ा आड़ा कटा है या आड़ी सीयन ही करनी हो तो किसी रंगीन सूत से पहिले सीधा लंगर डाल कर तब सिलाई आरम्भ करे और सिलाई समाप्त होजाने पर लंगर का तागा खींच कर निकाल डाले।

(ख) पोस्तदाना बखिया या गठी बखिया-जिस स्थान से सूई डाल कर बाहर निकालते हैं उसी स्थान पर फिर लौट कर सूई डालते हैं और कुछ आगे को बढ़ा कर सूई फिर निकालते हैं और पुन: पीछे लौट कर पिछले टांके के पासही टांके देते हुए ऊपर लिखे क्रम से आगे बढ़े चले जाते

हैं। दौड़ की बखिया में केवल आधी दूर पीछे लौट कर सूई डालते हैं और इसमें पूरा पूरा पीछे लौट कर सूई फिर डालते हैं। जिस जगह पर सूई पहिले डाली गई थी ठीक उसी जगह में सूई फिर डालने से बखिया के टांके सटे सटे
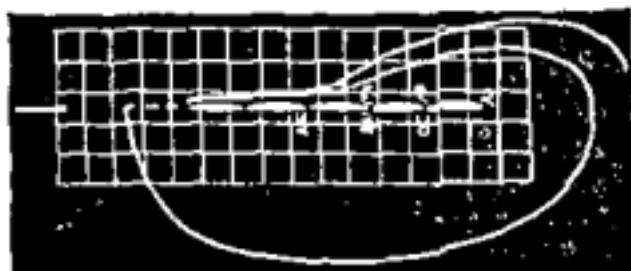
चित्र नं० ६

गठी बखिया।

रहते हैं। मान लो कि दो सूतों के नीचे से सूई निकाली गई है, तो इन्हीं दोनों सूतों पर से सूई लौटा कर फिर उसी जगह सूई डालते हैं जहां पर सूई पहिले डाली गई थी अर्थात् सूई का धागा उन्हीं दोनों सूतों पर पड़े जिनके नीचे से होकर सूई ऊपर निकाली गई है और फिर आगे को दो नए सूतों के नीचे से लेजाकर सूई निकाले। इस तरह ऊपर की सिलाई एकहरी और नीचे की ओर दोहरी होगी।

चित्र नं० ७

बखिया की उलटी सीवन।
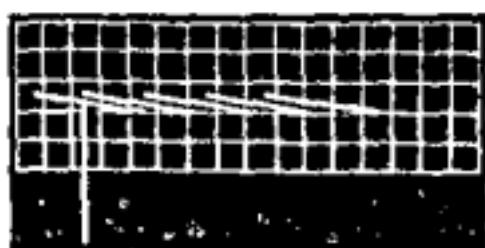
सूतों की गिनती बराबर रक्खे कि जिसमें टांके समदूरी के पड़ें, यही इसकी सुन्दरता है ।

(३) तुरपन ।

यह सिलाई गोट लगाने, अथवा कपड़े के फटे कगर के फुसड़ों को निकलने से बचाने के लिये की जाती है । यह सिलाई तिरछी सी जाती है । कपड़ा फाड़ने से जो फटा किनारा या कगर निकलता है उसे 'आंवट' कहते हैं। पहिले आंवट को चावल के दाने के बराबर मोड़ जाय और फिर इस मुड़े हुए आंवट को कुछ अधिक चौड़ा मोड़ दे। अब इस तरह सीना आरम्भ करे कि तह या मोड़ के बीच में से सूई को ऊपर की ओर निकाले। यह इस लिये करे कि तागे का आख़री सिरा इस तह के अन्दर दबा या ढपा रहे। सफ़ेद कपड़े में तागे का आख़री सिरा तह के अन्दर दबा रहने से एक तो वह दिखाई न देगा और दूसरे सिलाई पक्की रहेगी।

चित्र नं० ८

तुरपन की सिलाई का ढंग ।
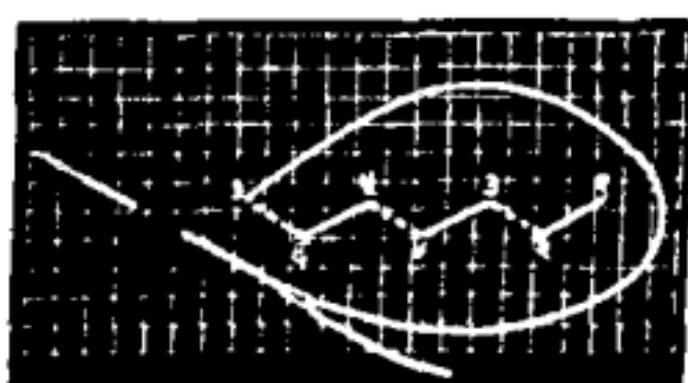
अब आंवट के या तह के मोड़ के पास ही नीचे के कपड़े के सूत में सूई को इस तरह डाले कि यह टांका ऊपर के टांके के ठीक नीचे या उनकी बीच में नहीं बल्कि उससे कुछ तिरछे

बगल में पड़े, जैसे चित्र नं०८ में १ के स्थान से सूई ऊपर निकाल कर अंक २ पर सूई फिर कपड़े के नीचे डाली गई है और नीचे नीचे सूई लेजाकर अंक ३ पर निकाली गई है, इसी भांति पुनः ४ पर सूई का टांका दिया और ५ पर सूई निकाली, इसी प्रकार अन्त को सूई अंक ७ पर निकाल कर फिर आड़ा टांका देते हुए चित्र में दिखाया गया है। इसी तरह तिरछी सूई डालने से तिरछे टांके पड़ते हैं। अब ऊपर के मुड़े हुए तह के किनारे पर से दो सूत वा तीन सूत ऊपर के छोड़ कर सूई बाहर निकाल ले। फिर इसी प्रकार सूई नीचे लाकर नीचे पल्ले के सूत में से डालकर गोट वा मुड़े आंचट के ऊपर तिरछी सिलाई करती जाय और गोट वा आंचट के मोड़ फेर उंगली से दबाकर जमाती जाय। इस सिलाई को तुरपना कहते हैं। [चित्र नं० ९ देखो।

याद रक्खे कि सीकर धागे को ज़ोर से तान कर न खींचे अर्थात् कस कर टांके न दे, क्योंकि कपड़ा धुलने पर धागे कुछ सुकड़ जाते हैं और इनके सुकड़ने के तनाव से गोट में भी सिकुड़न आजाने का भय रहता है। दूसरी बात ध्यान रखने की यह है कि आंचट वा गोट की तह साफ़ हो अर्थात् कहीं सिकुड़न न रहे, नहीं तो गोट बेढंगम मालूम देगी। यदि गोट चौड़ी हो तो उसको कपड़े पर बराबर जमा कर पहिले लंगर डाल जाय। कम चौड़ी गोट में लंगर डालने की आवश्यकता नहीं होती है। इस सिलाई में टांके कोई छोटे कोई बड़े वा कोई पास और कोई दूर न हों बल्कि सब एक समान रहें। जब तक हाथ न मँज जाय तब तक सूतों को ही गिनती से टांके भरने की आदत रक्खे।

तुरपन की सिलाई दो प्रकार की होती है, (क) चिपटी तुरपन, (ख) गोल तुरपन वा लुढ़ियाना।

(क) चिपटी तुरपन–इस की सिलाई ठीक वैसी ही की जाती है जैसी कि ऊपर तुरपन में लिखी गई है। जब दो कपड़ों की आवटों को मिलाकर बखिया वा अन्य प्रकार की सिलाई से सी देते हैं तो उसकी आवटों के किनारे उभरे रह जाते हैं, इनको जमा कर बैठा देने के लिये ही उक्त

चित्र नं० ८
चिपटी तुरपन से कोता सीना।

चित्र नं० १०
चिपटी तुरपन से उभरी कगर सीना।
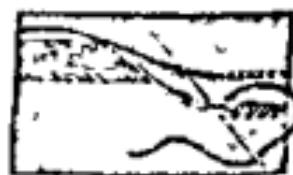
दोनों रीतियां बरती जाती हैं। आवटों के उभरे किनारों को कपड़े पर मोड़कर चपटा जमा देने और उसे तुरप देने को 'चिपटी तुरपन' कहते हैं। यदि दो आवटों की कोरें हों तो इन आवटों को मोड़ने के पहिले एक पल्ले की आंवट के किनारे को काटकर आधा कर देते हैं और दूसरी बड़ी आंवट को उस छोटी अर्थात् कतरी हुई आंवट पर तहिया कर कपड़े पर जमा देते और तब तुरपन कर देते हैं। यह भी एक प्रकार की चिपटी तुरपन हुई। [चित्र नं० १० देखो।

(ख) 'गोल तुरपन'–जब महीन कपड़े की आवटें लग-भग किनारे ही पर से सी जाती हैं, तब उनके पहिले किनारों

को उंगलियों से मरोरी देकर गोल मोड़ देते हैं और इस डोरी या बत्ती पर तुरपन की सिलाई करते जाते हैं। इस सिलाई में लपेट या मोड़ के ठीक किनारे के पास से सूई डाल कर तुर्री की तहों के बीच में से वह निकाली जाती है।
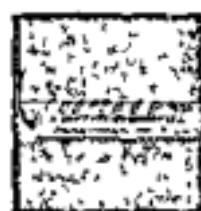
चित्र नं० ११ गोल तुरपन।

ये सिलाइयाँ कपड़े के सीधी ओर की जाती हैं। सिलाई करते समय कपड़े का उलटा सीधा देख ले।

(४) ओरमा।

यह सीवन भी आंवटों के जोड़ने के काम की है। कपड़े सीने में जब उनकी आंवटों को उलटी ओर मोड़ कर नहीं सी सकते अथवा जब आंवटों को मोड़कर सीना नहीं चाहते, तब इस सीवन से काम लेते हैं। दोनों आंवटों की कोरों को अन्दर की तरफ़ मोड़ कर आपुस में मिला देते
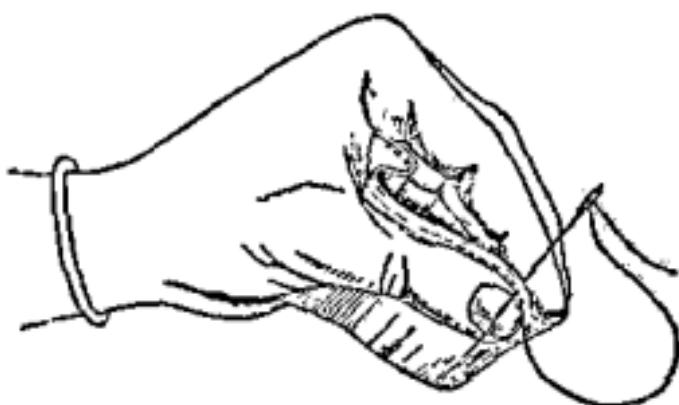
चित्र नं० १२—ओरमा।

हैं, तब आगे की ओर से सूई को दोनों आंवटों या कोरों में से डाल कर ऊपर को निकाल लेते हैं और फिर धागे को उन कोरों के ऊपर से लाकर सूई डालते हैं। इस सीवन का नाम 'ओरमा' है।

ज़रूरी बातें।

बड़े कपड़ों की सिलाई में कई वेर धागे बढ़ाने पड़ते हैं, और जब सीयन समाप्त हो जाती है तब धागा काट देना पड़ता है। जब सूई का धागा चुक जाय और अभी आगे सिलाई करनी और भी रह जाय, तब इस अवस्था के लिये लड़कियों को यह भी सिखाना आवश्यक है कि दूसरा धागा सूई में परोकर क्योंकर सिलाई बराबर सी जा सकती है और दोनों धागे के सिरे सिलाई के अन्दर क्योंकर डाल कर उन्हे छिपा सकते हैं अथवा सिलाई समाप्त होने पर किस प्रकार धागे के कपड़े में अटका देना वा गठिया देना चाहिए। सीते सीते बीच ही में जब धागा चुक जाय और नया धागा जोड़ना पड़े, तब यह करे कि यदि तुरपन की सिलाई सी जा रही हो तो आख़री टांके की सूई के गोट के बीच ही में से निकाल ले और धागे के सिरे के गोट और कपड़े की तह के अन्दर ही फैला दे और जहां सीयन समाप्त हुई हो वहीं से नए धागे से सीना आरम्भ कर दे। इसका भी पिछला सिरा, तह के बीच में समाप्त हुए धागे के सिरे के साथ तह के अन्दर फैला दे कि जिसमें वे दोनों सिरे तुरपन के टांकों से दबे रहें।

यदि बख़िया में धागा जोड़ना पड़े तो जहां पहिले धागे का शेष सिरा छोड़ दिया गया है वहीं पर नया टांका लगावे और दोनों धागों के सिरों के कपड़े के उलटी ओर उस तरफ़ फैला दे जिधर अभी सीना है और इन्हीं पर से इधर उधर की दो तिरछी बख़िया के टांके देते हुए आगे बख़िया जाय।

जब सीवन समाप्त हो जाय तब सूई से दो या तीन टांके उसी जगह पर देकर सूई को उन टांकों के धागें के बीच में से लपेट देकर निकाल ले और कस दे और कैंची से धागे को टाँके के पास से काट कर उंगली से दबा दे।

जब ये सब सादी सिलाइयां लड़कियों को खूब आजांय और वे सुघरी सिलाई करने लगें, तब उनको दूसरे प्रकार की सिलाइयों का अभ्यास करावें। साधारण रूप से इन्हीं सिलाइयों का काम कपड़े सीने में ज्यादा पड़ता है, तो भी कारीगरियों की दूसरी सिलाई का अभ्यास करा देना उचित है। इन सिलाइयों का अभ्यास पहिले गुड़िया की ओढ़नी इत्यादि सीने में कराया जाय या फटी पुरानी धोती इत्यादि पर हाथ मंजाया जाय।

तीसरा अध्याय।

हुनर की सिलाइयां।

ये सिलाइयां प्राय: मरम्मत करने के लिये अथवा कारीगरी की सिलाई में काम आती हैं। कपड़ों में प्राय: खोंच लगने से किंवा कपड़े के कुछ सूत घिस या गल जाने से चीर पड़ जाती है। यदि उनमें उसी दम टांके दे दिए जांय तो कपड़ा और ज्यादा नहीं फटने पाता और वह पहिनने योग्य बना रहता है। यद्यपि मरम्मत का काम देखने में कुछ बहुत कठिन और बुद्धिमानी का नहीं जान पड़ता, परन्तु वह इतना सहज भी नहीं है। इसका काम बहुधा पड़ा करता है। सच पूछो तो फटे कपड़े की मरम्मत करना बड़े

दीदारेज़ी, बुद्धि और चतुराई का काम है। यों तो फूहर स्त्रियां फटे कपड़ों में मोटे मोटे टांके भर कर गुद्दल सी मरम्मत कर देती हैं। क्या यह देखने में बुरी और बेढंगम नहीं मालूम देती? क्या साफ सुथरे कपड़े पहिनने वाले लोग ऐसे कुढौल मरम्मत किए हुए कपड़े पहिनना पसंद करेंगे! गंदी सिलाई की मरम्मत से तो फटे ही कपड़े पहिनना अच्छा है। अतएव उत्तम रीति से मरम्मत इत्यादि की सिलाइयों के जान लेने से कितना लाभ हो सकता है यह किसी से छिपा नहीं है। नए और मज़बूत कपड़ों में भी यदि खोंच लग जाय और यदि उसकी मरम्मत न कर दी जाय तो खोंच बढ़ती ही जायगी; जो कपड़े एक साल चलने योग्य होते हैं, वे भी शीघ्र ही फट कर बेकाम होजाते हैं। यदि उसकी तुरत मरम्मत कर दी जाय तो वे फिर अटल होजाते हैं और इससे बहुत किफ़ायत हो सकती है।

मरम्मत की सिलाइयां।

मरम्मत तीन प्रकार से हो सकती है (१) टांकना (२) थिगली या पैबंद लगाना और (३) रफ़ू करना। पहिले हम मरम्मत के टांकों का वर्णन करते हैं। फिर कुछ कारीगरियों की सिलाइयों के विषय में लिखकर आगे के अध्याय में मरम्मत के शेष काम क्रम से लिखेंगे।

टांकना।

(१) टांकना—यह बहुत ही सीधी सादी विधि है और जब किसी कपड़े में सीधी चीर पड़ जाय, तब इसीसे काम निकल सकता है। चीर की दोनों आंवटों को बराबर मिला-

कर और उसके किनारे पर के एक या दो सूत छोड़ कर बांई ओर से दहिनी ओर को सूई इस तरह डाले कि दूसरी आंवट के एक या दो सूत के बाद सूई निकले। यह सीवन सीधी ओर

चित्र नं० १६

चीर टांकना।

सीधी और उलटी ओर कुछ तिरछी होगी। इसको यों भी सी सकते हैं कि चीर की दोनों आवंटों को बराबर मिलाकर उन पर ओरमे के टांके दे दे। टांकों को कसे नहीं कि जिसमें जब कपड़ा फैलाया जाय, तब दोनों आंवटें आमने सामने मिली रहें। यह सिलाई उन कपड़ों में करनी चाहिए कि जिन में कूसड़े न हों अर्थात् कपड़े के सूत ऐसे ढीले न हों कि निकल जांय, किंवा जिन कपड़ों के सूत मोटे हों उनमें भी यह काम दे सकती है। इसी सिलाई के हुनर के काम भी हैं।

(क) इमिलिया पत्ती।

(क) इमिलिया पत्ती के टांके-पहिले चीर की दोनों आंवटों के दोनों सिरों को आमने सामने लाकर मिलादे और एक किनारे के दो या तीन सूत छोड़ कर उलटी ओर से सूई डाले और दूसरी आंवट के बीच में से सूई बाहर निकाले, फिर दूसरी आंवट के ऊपर के दो या तीन सूत छोड़ कर टांके दे और फिर आंवटों के बीच में से सूई
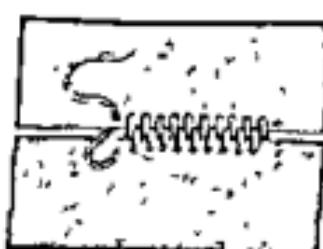
लाकर पहिली आंवट पर टांका लगावे । ये टांके सीधे अर्थात् येड़े डाले जांय । इस सिलाई में जिस आंवट के ऊपर धागा पड़े उसीके सामने दूसरी आंवट के नीचे धागा पड़े ।

चित्र नं० १४
इमिलिया पत्ती के टांके ।

(ख) आंवला पत्ती ।

(ख) आंवला पत्ती के टांके—इस सिलाई की रीति ऊपर ही लिखे अनुसार है, भेद केवल इतना ही है कि इसके टांके सीधे न होकर आड़े होते हैं ।
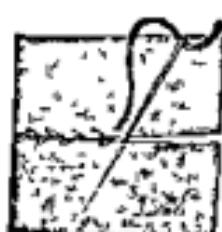
चित्र नं० १५
आंवला पत्ती ।

फूसड़ेदार कपड़े की मरम्मत ।

जिस कपड़े की आंवटों वा जिसके किनारों के सूत फूस की तरह छितर जाते हैं वा निकल जाते हैं उनको सीधी ओर से आपुस में मिला दे और किनारे के पास पास पसूज की सिलाई कर जाय। इसके बाद कपड़े के सिले पल्लों को दोनों तरफ़ इस प्रकार पलट दे कि उनकी उलटी तह आपुस में मिल जांय और पसूज की सिलाई इनकी तह के नीचे आजाय, तब इस जोड़ पर ओरमे की सिलाई कर दे ।
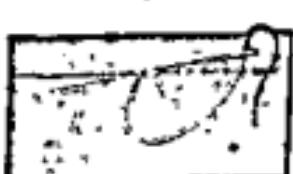
चित्र नं० १६
फूसड़ेदार कपड़े की मरम्मत ।

दूसरी रीति ।

पहिले एक पल्ले की फूलदेदार आंवट के किनारे की महीन दोहरी तह कर दे अर्थात् किनारे को एक पर एक दो बेर मोड़े । इसी तरह दूसरे पल्ले के किनारे भी दो बेर मोड़े । इन दोनों मोड़ों को आपुस में मिलाकर इन छ तहों पर ओरमे की सिलाई से सी दे अथवा तुरपन की तिरछी सिलाई करदे । यह सिलाई बहुत महीन कपड़े में की जाती है ।

चित्र नं० १७
दूसरी रीति ।

तीसरी रीति ।

दोनों फूलदेदार किनारों को मिलाकर उनको गोल लपेट दे और छहों तहों में सूई डालकर सीधे या तिरछे, जैसी इच्छा हो, टांके दे जाय । टांके हमेशा समान दूरी पर पड़ें, इसका ज्यादा ध्यान रक्खे । यह भी बहुत ही महीन कपड़े की मरम्मत के काम में लाई जाती है । यह टांका ठीक गोल तुरपन के सदृश होता है और आंवटों की लपेट से जो डोरी बनाई जाय वह बहुत ही महीन होनी चाहिए और टांके भी महीन हों । जहां तक हो सके गोल लपेट मोटी न हो । इस तरह करने से कपड़े पर सिकुड़न बेमालूम आती है और मरम्मत मज़बूत होती है ।

अब थोड़ी सी कारीगरियों की सिलाइयां आगे लिख दी जाती हैं, इन सबका काम भी प्रायः पड़ा करता है । इन का अभ्यास कर रखने से हाथसूथ मँज जाता है, सिलाई के गुर समझ में आजाते हैं और हर प्रकार की सिलाई सुडौल और सहज हो जाती है ।

होकर निकाली जाय, फिर ऊपर सूई को तिरछी दहिने हाथ की तरफ़ लेजाकर सूई आंवट की तहों में इस प्रकार बेड़ी डाले कि वह तीन या चार सूतों के नीचे से होकर बांई ओर को निकले और फिर सूई को नीचे दहिनी तरफ़ तिरछी लाकर बेड़ी सीयन डाले, जैसा कि ऊपर बताया गया है और इन्हीं रीतियों से आगे को नीचे ऊपर सीतीं चली जाय।

चित्र नं० १८ में ज़ंजीरेदार सीयन की उलटी ओर की सिलाई दिखाई गई है और यह सिलाई गोटे पट्ठे टांकने के काम में भी लाई जा सकती है, जिससे गोटे पट्ठे के दोनों किनारे एक साथही टक जाते हैं। इसकी रीति यह है कि गोटा, किनारी, वा फ़ीता किसी आंचल के किनारे पर लगाकर उस पर पहिले लंगर डाल जाय। फिर उस कपड़े की उलटी ओर, अर्थात् जहां फ़ीता वा गोटा लगा है उसके ठीक पीठ पर, जंजीरे की सिलाई इस तरह पर करे कि सूई के टांके फ़ीते वा गोटे की कोरों पर पड़ें। अथवा सीधी ओर इस तरह सीना आरम्भ करे कि गोटे के किसी एक किनारे पर एक टांका पीछे से देकर सूई ऊपर निकाल ले, इसके बाद अब जो सूई डाले तो इस तरह डाले कि सूई ऊपर के किनारे पर बाईं ओर घुस कर और कुछ तिरछी ही नीचे के किनारे पर दाहनी तरफ़ निकले, इसी प्रकार नीचे के किनारे पर बाएं सूई लेजाकर दूसरी बेर सूई डाले और सूई तिरछी ऊपर को लेजाकर ऊपर के अगले टांके के आगे बाईं ओर निकाले और फिर खाली जगह पर लौटकर अर्थात् जहां पिछला टांका पड़ा है ठीक उसी के पास से तीसरा टांका देते हुए तिरछी सूई करके नीचे के किनारे पर उस के

पिछले टांके से कुछ आगे निकाले । इसी ढंग से बराबर सीती जाय तो गोटे वा फ़ीते के दोनों किनारे एक दम ही

चित्र नं० १८

गोटे पट्ठे की सिलाई ।
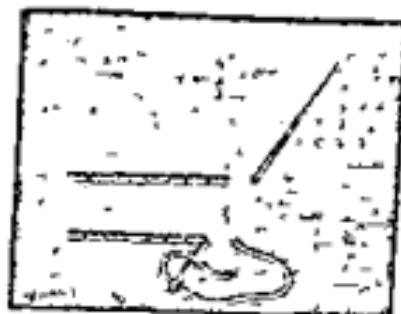
ऐसे टकते जांयगे मानों दोनों ओर अलग अलग बख़िया की गई है । किनारे की सीयन चाहे सटी हुई गठी बख़िया के समान की जाय चाहे ज़रा हटे हटे टांके भरे जांय। दोनों तरह की सिलाई हो सकती है, यह सीने वाले की इच्छा पर है कि चाहे जैसी सिलाई करे । दोनों की विधि एक ही है, केवल टांकों के दूर दूर वा सटे सटे रहने का भेद है ।

चुनट की सिलाई ।

कपड़े में चुनट लाने की कई विधियां हैं । पहिली विधि यह है कि कपड़े में पसूज की सिलाई से सीधे तगिया जाय । यदि चुनट महीन लानी हो तो पास पास के टांके दे, नहीं तो दूर दूर के (अर्थात् जैसी चुनट लानी हो उसी अंदाज़ से तगियाये) । कुछ टांके लगाकर कपड़े को धागे पर

घटीरतो जाय । (जैसा चित्र नं० २७ में दिखाया गया है)। टांके समान दूरी पर जरूर हों कि जिसमें चुनट भी
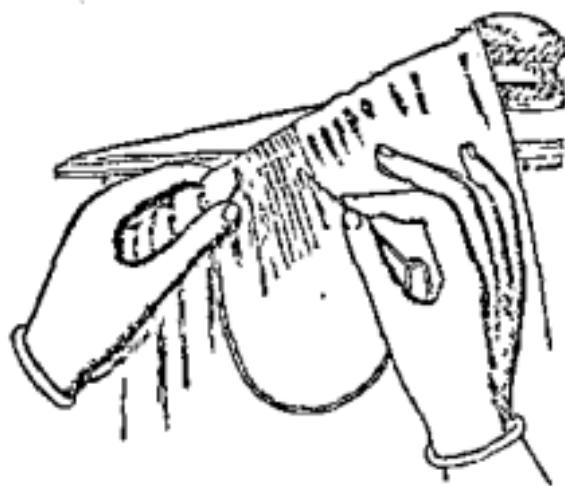
चित्र नं० २७ ।

सीधे चुनट की झालर ।

समान आवे । यह सीने वाली की इच्छा पर निर्भर है कि चाहे चुनट घनी रक्खे वा फरहरी ।

इसी प्रकार पहिली सीयन के नीचे दूसरी पंक्ति वा तीसरी पंक्ति भी तगिया कर चुनट को चौड़ा कर दे सकते हैं ।

अब यदि इस चुनटदार कपड़े पर फ़ीता लगाना हो या इसी को किसी सीधे कपड़े के साथ सीना हो, तो दोनों को मिलाकर प्रत्येक चुनट की तहों पर टांके दे जाय। इसमें तिरछी तुरपन भली मालूम देती है ।

कटावदार चुनट ।

किसी कपड़े पर लहरिएदार पमूज की सिलाई पास पास करे अर्थात् कपड़े को इस प्रकार तगियावे कि सिलाई

लहरिएदार अर्थात् सर्पगति सदृश〰〰 इस प्रकार की इं टांके कुछ दूर दूर देकर कपड़े को धीरे धीरे तागे पर बटोर

चित्र नं० २१ ।
फटाव दार झालर ।

जाय और सूई से छोटी बड़ी चुनटों को बराबर कर दे तो चित्र नं० २१ की सी फटावदार झालर बन जायगी ।

सिलवटदार झालर ।

किसी कपड़े के किनारे को पहिले गोल लपेटे फिर सूई को इस समेटी हुई लपेट के बग़ल से डालकर और लपेट के दूसरी ओर तिरछी लेजाकर टांका दूसरा दे और इस तरह

चित्र नं० २२ ।
सिलवटदार झालर ।

के दो तीन टांके देकर तागे को ज़रा ज़ोर से खींचे तो इस लपेट पर ऐंठन पड़ जायगी और साथ ही कपड़े पर भी सिलवट या इसकी चुनट आजायगी । यह चुनट महीन, चिकने और नरम रेशम इत्यादि के से कपड़े पर लाई जाती है और बड़ी शोहावनी मालूम देती है ।

चपटा फ़ीता या संजाफ़ लगाना।

कपड़े के किनारे पर सीधी ओर फ़ीता वा संजाफ़ रखकर पहिले दौड़ की बखिया कर जाय, फिर संजाफ़ के किनारे को कपड़े की आंवट पर दोहरा कर वा लपेट कर तुरपन, पसूज या बखिया की सिलाई कर दे।

गोल फ़ीता टांकना।

गोल फ़ीते को कपड़े के किनारे पर रख कर तुरपन की सिलाई कर दे, परन्तु याद रक्खे कि फ़ीता ऐंठने न पावे और न फ़ीते को बहुत तान कर ही सीए।

फ़लीता।

कभी कभी सुन्दरता लाने को कपड़े के बीच में गोल फ़ीता या डोर भी डाल कर सीते हैं। इसमें केवल डोर को

चित्र नं० २३।

फ़लीता।

कपड़े में एक लपेट से लपेट कर कपड़े के जोड़ पर पसूज की सीयन सी दी जाती है। इसी डोर भरने का नाम फ़लीता है।

काज और बटन की सीयन।

कपड़े में बटन लगाने के लिये जो छेद बनाया जाता है उसको 'काज' कहते हैं। काज की सिलाई बड़ी मज़बूत

का टांका पड़े परन्तु ये दोनों पंक्तियां सटी सटी रहें । अब इस पसूज या बख़िया पर काज की सिलाई की जायगी । कभी कभी मेहनत बचाने के लिये काज के लम्बोलम्ब केवल दो तीन टांके धागे से देकर ही उन पर काज की सीवन कर देते हैं लेकिन यह उतनी मज़बूत नहीं होती ।

काज की सीवन इस तरह से की जाती है कि पहिले सूई को उक्त पसूज के एक किनारे के टांके में से निकाले और धागे के आख़िरी सिरे को उसी टांके के नीचे दबा रहने दे । अब सूई को काज के चीर में से डाल कर और कपड़े के नीचे से बींध कर इस प्रकार ऊपर को निकाले कि सूई पसूज या बख़िया की दूसरी ओर दो या तीन सूत बाद ऊपर को निकले । सूई को पूरी तरह से निकाल लेने के पहिले उसके धागे की एक लपेट सूई पर दे दे । यह लपेट धागे के उस भाग से दे जिधर से वह परोया हुआ है, अर्थात् धागे के अगले भाग को सूई के नीचे से लेजाकर उसको दूसरी बगल में निकाल दे और तब सूई को खींच कर निकाल ले । धागे के लपेट की गांठ काज के किनारे पर पड़ेगी । इसी प्रकार कुछ पास पास टांके दे जाय । काज के अगले किनारे पर गोल सिलाई करे, यह गोल सिलाई पहिनने के कपड़े के काज में दी जाती है, पर बेठन या ग़िलाफ़ इत्यादि में किनारों पर की सिलाई तिकोनी या चौड़ी होती है और
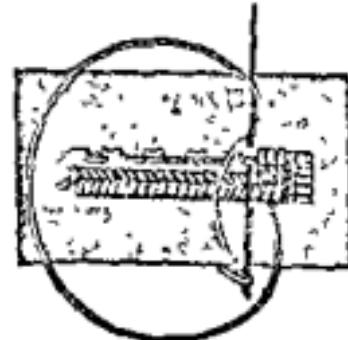
चित्र नं० २४ ।

काज की सिलाई नं० १ ।

काज के पिछले किनारे की सिलाई सभी में चौड़ी होती है।

काज की सिलाई नं० २ ।

इसमें सब काम वैसेही किए जाते हैं जैसे ऊपर कह आए हैं, परन्तु काज की सिलाई के फंदों में तनिक भेद है। इसमें फंदा इस प्रकार देते हैं कि धागे के आखरी भाग को सूई के ऊपर से घुमाकर उस पर एक टांका दे लपेट देते हैं, अथवा सूई निकाल कर उसके धागे को ऊपर ही फैला छोड़ दे और सूई को चीर के किनारे में से और उस फैले धागे की लपेट में से घुमा कर निकाल ले। इसमें फंदे की गांठ न पड़ कर केवल जंजीरे का सा अटकाव पड़ जायगा।
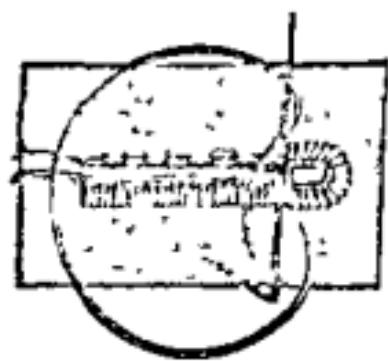
चित्र नं० २१।
काज की सिलाई नं० २।

जिस कपड़े के सूत फुसफुसदार हों उस पर पहले करके तब चीर काटे और काटते ही गोंद के लस से चीर को तर कर दे, उस पर दो तीन धागे चीर की लम्बाई में रखकर उनपर उक्त रीति से सिलाई कर दे। यह सिलाई बड़ी मजबूत होगी।

बटन लगाना।

बटन तीन प्रकार के होते हैं—एक तो वे जो सूत बुन कर बनाए जाते हैं या सूत या कपड़े से मढ़कर (२) किसी ठोस पदार्थ के जिनके पेंदे में दो या चार छेद होते हैं, जैसे सीप या सींग के (३) वे जिन के नीचे कड़ी लगी होती है।

काज को सीने के बाद काज के पल्ले को बटन वाले पल्ले पर बराबर रक्खो और काज के ठीक बीच में से पेंसिल द्वारा

दूसरे पल्ले पर चिन्ह करदे कि जिसमें बटन ठीक ठीक स्थान पर लगाए जा सकें। अब इन्हीं चिन्हों पर बटन सीए जायंगे।

पहिली क़िस्म के बटन को, उनकी पेंदी के मढ़े हुए सूत, कपड़े या छेदों में से सूई डाल कर, कई टांकों से सी दे।

दूसरी क़िस्म के बटन को उनके छेदों में से सूई के टांके दे।

तीसरी क़िस्म के लिये चिन्हों पर छोटा गोल छेद कैंची की नोक से बना दे। छेद इतना बड़ा हो कि बटन का कुंडा उसमें घुस सके। अब इस छेद के चारों ओर काज की सिलाई से सीकर मज़बूत कर दे। इस छेद में बटन का कुण्डा डाल कर उसमें छोटी छोटी कड़ियां पहिरा देते हैं जिनसे बटन अटके रहते हैं, गिरते नहीं। इस तरह के बटन में यह फ़ायदा है कि जब चाहो बटन अलग करके दूसरे कपड़े में लगालो।

पहिली दोनों क़िस्म के बटनों में टांके लगाने के बाद उनके पेंदे में पांच छ लपेट धागे की दे दे कि जिसमें बटन उभरे रहें, फिर सूई को कपड़े में डाल कर उलटी तरफ़ निकाल ले और वहीं पर दो टांके ऐसे दे दे कि धागे की गांठ अपनेही सीयन में पड़े फिर कैंची से धागे को काट दे।

चौथा अध्याय

मरम्मत।

किसी किसी कपड़े में ऐसी खोंच लग जाती है कि यदि उसके सिरे मिलाकर सीए जांय तो कपड़े में बड़ा झोल

निएरे सूत नं० ८ से नं० २०० तक १८ किस्म के होते हैं-- इनके नं० ये हैं–८, १०, १२, १४, १६, १८, २०, २५, ३०, ३५, ४०, ४५, ५०, ६०, ७०, ८०, ९०, और १०० । रफ़ू के लिये रंगीन धागे नं० १२, २५ वा ८० के काम में लाए जा सकते हैं। सफ़ेद कपड़े पर रफ़ू करने के लिये वेनिएरे धागे अधिक उपयोगी होते हैं । मोटे और महीन के क्रम से यों समझना चाहिए कि मोटे से मोटा धागा नं० ८ का और महीन से महीन नं० १०० का होता है ।

मोटे धागे के बट खोलकर, उनके सूतों से भी महीन सूत के रफ़ू हो सकते हैं । इसी प्रकार दो महीन सूतों को बटकर जितना चाहें मोटा सूत बना लिया जा सकता है । यदि बहुत ही महीन सूत का और बहुत उत्तम कपड़ा हो तो काटन सरफिन डी० एम० सी० (Cotton Surfin D. M. C.) नाम के टिकट के धागों से रफ़ू करना उत्तम है ।

रफ़ू की किस्में ।

रफ़ू की चार किस्में हैं-(१) सादा रफ़ू (२) झीन बिनावट का रफ़ू (३) महीन रफ़ू (४) जामदानी का रफ़ू ।

(१) सादा रफ़ू ।

यह भी दो प्रकार का होता है (क) सीधा रफ़ू (ख) आड़ा रफ़ू ।

(क) सीधा रफ़ू ।

रफ़ू हमेशा उलटी तरफ़ करना चाहिए। कपड़े के छेद से (जिसका रफ़ू करना है) चार पांच जव (जौ) के बराबर दूरी से रफ़ू करना आरम्भ करे । इस रफ़ू की विधि

यह है कि कपड़े के सूतों में एक सूत के नीचे और दूसरे के ऊपर फिर तीसरे के नीचे और चौथे के ऊपर इसी तरह पसूज की तरह तागे भर जाय और जब छेद के किनारे पर पहुंचे तब धागे के छेद को पार तक लेजाकर दूसरे किनारे पर भी उसी प्रकार एक सूत के ऊपर और एक के नीचे के क्रम से सूत भरता हुआ ५ वा ६ जव की दूरी तक चलो जाय। फिर लौट कर दूसरी पंक्ति का सूत भरे। जहां से मुड़े वहां पर धागे को कसे नहीं किन्तु कुछ ढीला ही छोड़ दे। जब एक तरफ़ के धागे भर जांय तब दूसरी तरफ़ के धागे भरे अर्थात् यदि ताने के सूत पहिले भरे गए हैं तो बाद को बाने के सूत ठीक उसी प्रकार से भरना आरम्भ करे जैसे ताने के सूत भरे थे, मगर छेद पर जो ताने के तागे कैले हैं उन पर बाने की बुनन एक ऊपर एक नीचे की रीति से अथवा जैसी बिनावट कपड़े की है ठीक उसी तरह के बुनन की बुनाई से रफ़ू करे।

चित्र नं० २८—तानों का रफ़ू।

चित्र नं० २९—बाने का रफ़ू।
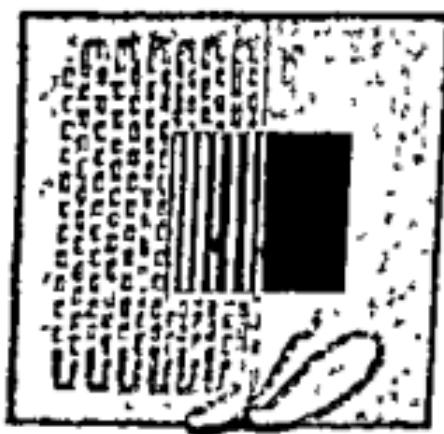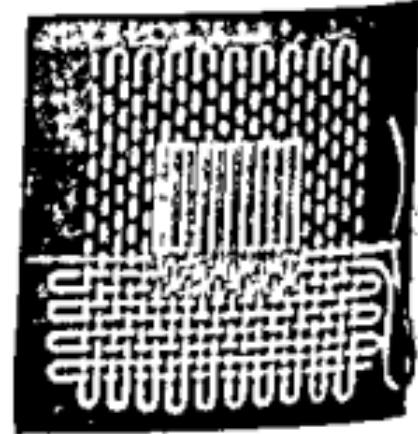
ताने भरने में यदि कोई धागा इधर उधर निकल जाय तो सूई से उसे हटा कर एक समान करदे ऐसे कि और धागे

हैं। जहां तक बने धागे वैसेही भरे जैसी कि कपड़े की बिनावट है। इस विधि से रफ़ू बेमालूम होता है अर्थात् यह रफ़ू जल्दी प्रगट नहीं होता।

(ख) आड़ा रफ़ू।

कभी कभी सीधा रफ़ू न करके धागे तिरछे अर्थात् आड़े भरे जाते हैं। इसमें ताने का रफ़ू तो सीधा ही होता

चित्र नं० २८-आड़ा रफ़ू।

है पर बाने का रफ़ू आड़ा भरते हैं। इसमें दोष यह है कि रफ़ू स्पष्ट मालूम देजाता है।

(२) ज़ीन बुनावट के रफ़ू।

ज़ीन की बुनावट कई प्रकार की होती हैं। जिस बिनावट का कपड़ा हो उसी प्रकार का रफ़ू बेमालूम और सुंदर होता है। रफ़ू करने के पहिले कपड़े की बिनावट को ख़ूब समझ लेना चाहिए, तब रफ़ू करना उचित है। सभी प्रकार की बिनावट के रफ़ू को लिखना व्यर्थ है। हम केवल एकही प्रकार के सहज रफ़ू की विधि उदाहरण स्वरूप लिख देते हैं। इसके समझ लेने से बहुत कुछ अटकल आ जायगी।

पहिले तो सीधे रफ़ू की रीति से ताने के रफ़ू करदे, परन्तु अब बाने का रफ़ू करे तब कपड़े की बिनावट के अनुसार ही तागे भरे । जैसे, पहिली पंक्ति में एक सूत छोड़ और एक सूत लेकर धागे भरजाय, दूसरी पंक्ति में दो सूत छोड़ कर एक सूत ले । तीसरी पंक्ति में तीन सूतों को छोड़े और एक को ले । अब चौथी पंक्ति से फिर ऊपर लिखे क्रम से रफ़ू करे ।

जहां तक बन सके कपड़े की बिनावट से रफ़ू की बिनावट को मिलादे कि जिसमें दोनों की बिनावट मिलती जुलती एक समान ही मालूम दे । इसमें बड़ी बुद्धि और सुघड़ई का काम है ।

चित्र नं० २८-महीन रफ़ू ।

(३) महीन रफ़ू (चित्र नं०२८-देखे) और (४) जामदानी के रफ़ू लड़कियों के लिये कठिन हैं, इस लिये छोड़ दिए जाते हैं । ये दोनों अधिक उपयोगी भी नहीं हैं ।

पैवंद लगाना ।

थिगली लगाने का काम प्रायः पड़ा करता है । यों तो फूहर से फूहर स्त्रि भी थिगली लगा लेती है, पर पैवंद

लगाने में किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए और उन्हें क्योंकर सुंदर बना देना चाहिए यही सुघड़ता का काम है ।

जिस कपड़े में बड़ा छेद होगया हो वा कपड़े के सूत किसी कारण से जल वा गल गए हों तो पहिले उन गले सूतों को काट कर निकाल डाले । जहां तक बने पैवंद का कपड़ा लगभग उसी मेल का हो जैसा कि वह कपड़ा है जिसमें यह पैवंद लगाना है अर्थात् धारीदार कपड़े में धारीदार, चौख़ाने में चौख़ाने का । जहां तक बने इसका भी ध्यान रक्खे कि उनकी धारियां मिली हों अर्थात् उनकी धारियां एकही सीध में हों, धारियों के रंग भी एक से हों ।

पैवंद छेद से कुछ बड़ा होना चाहिए वा ठीक बराबर कि जिसमें दोनों की आवटें बराबर मिल जांय । यदि

चित्र सं० ३७—पैवंद वा थिगली ।
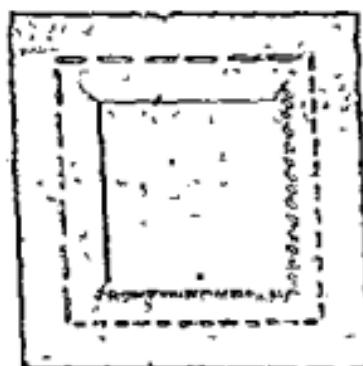
बराबर का पैवंद लगाना हो तो उन्हें बराबर रखकर उनपर रफू करके जोड़ दे । दूसरे प्रकार में यह करे कि पैवंद को छेद पर रखकर हाथ से बराबर करले कि जिसमें कहीं

सिकुड़न न पड़ने पावे। इनमें भी धारियों के रंग और सीध का ख्याल कर ले। जब ठीक तौर से पैबंद का मिलान कपड़े से होजाय तो पहिले पैबंद के चारों ओर लंगर डाल जाय कि जिसमें सीते समय पैबंद हट बढ़ न जाय। अब कपड़े के छेद के किनारे को यदि वह कुसड़ेदार हो तो अंदर को कुछ मोड़ कर पैबंद सहित तुरुप दे। यदि मज़बूत सूत का कपड़ा है तो उसके छेद के किनारों पर दौड़ की बख़िया करती हुई पैबंद को जोड़ दे। छेद में यदि कोने हों तो कोनों को कैंची द्वारा कुछ चीर कर उन्हें मिलाते हुए बख़िया दे। यह इसलिये करते हैं कि जिसमें कोनों पर सिकुड़न न पड़े। पैबंद के कोनों को अठपहला बनाकर भी उन पर काज की सिलाई नं॰ २ की सीयन सी देते हैं।

और भी कई विधियां हैं पर लड़कियों के लिये इतनाही काफ़ी है।

पांचवां अध्याय।

कसीदा काढ़ना।

सूई के काम कई प्रकार के होते हैं, जैसे काढ़ना, चिकन बनाना, जाली बनाना, ज़रदोज़ी इत्यादि। घर गृहस्थी में कपड़े काढ़ कर उनपर बेल बूटे प्रायः बनाए जाते हैं, अतएव क़सीदे का काम लड़कियों को अवश्य सिखाया जाय। धागे भरकर बेल बूटे इत्यादि बनाने का नाम 'कसीदा काढ़ना' है।

कपड़ों पर कसीदा काढ़ने के पहिले उन पर छापे द्वारा जैसे चाहें बेल बूटे छाप ले या छपवा ले। बेल बूटे छापने

के लिये काठ के बने छापे बाज़ार में मिला करते हैं। काढ़ने के काम के लिये कच्चे ही धागे ज़्यादा काम में लाए जाते हैं और येही उत्तम होते हैं। जो सूत कम बटे होते हैं उनको 'कच्चा धागा' कहते हैं। साधारण काम के लिये मोटे कच्चे सूत अर्थात् नीचे के नम्बरों के सूत काम में लाने चाहिएं, जैसे सूत नं० १, २, ३, (Soutache Nos 1, 2, 3,) और यदि बहुत महीन काम बनाना हो तो महीन सूत से काढ़े, जैसे काटन अ रिप्राइज़र (Cotton a Repriser) नं० २५ से ५० तक के धागे काढ़ने के योग्य होते हैं। इनके अलावा और भी कई प्रकार के सूत होते हैं, जैसे काटन अ ट्रीकोटर डी० एम० सी०, नं० ८ से २० तक (Cotton a tricoter D. M. C, Nos. 8 to 20), काटन ब्राडर डी० एम० सी०, नं० १६ से ५० तक (Cotton a Broder D. M. C, Nos: 16 to 50), फिल अ डेंटिल डी० एम० सी०, नं० २५ से ५० तक (Fil a dentelle D. M. C, Nos 25 to 50)

क़सीदे के तोपे कई प्रकार के होते हैं। जिस प्रकार का कसीदा काढ़ना हो वैसे ही तोपे दे। इन तोपों की कुछ विधियां नीचे लिख दी जाती हैं। जब कपड़ा छपकर तयार हो जाय तब उसपर नीचे लिखे तोपों में से किसी तोपों से उन छापों को भर दे वा उनके किनारों पर कसीदा काढ़ा जाय। कसीदे कपड़े की सीधी तरफ़ काढ़े जाते हैं।

सादा कसीदा।

पत्तियों की डांड़ियां पतली होती हैं, इस लिये इन डांड़ियों पर आड़े तोपे एक वा दो दो सूतों पर दे। पत्तियों की चौड़ाइयों में भी आड़े तोपे सटे सटे पक्की

की कम और ज़्यादा चौड़ाई के अनुसार इस प्रकार देवे कि पत्ती के एक किनारे से सूई निकाल कर दूसरे किनारे पर सूई डाले कि जिसमें धागे से पत्ती की चौड़ाई ढक जाय। फिर सूई इस टांके के बगल से निकाल दूसरे किनारे पर एक सूत के नीचे से निकाले। इसी प्रकार जहां जितनी चौड़ी पत्ती हो उतना ही चौड़ा काढ़े। इसका नाम भराव का क़सीदा है। सीवों के धागे एक दूसरे से सटे रहें।

गड़ारीदार कसीदा।

सीधी बेल के किनारे काढ़ने में यह काम आता है। किनारे पर पहिले पसूज सीधा कर जाय, तब इन्हीं पसूज की सिलाई पर इस तरह काढ़ना आरम्भ करे कि कपड़े की उलटी तरफ़ से सूई निकाल कर पसूज के ऊपर से सूई को

चित्र नं० ११ (क)-सीधी गड़ारी चित्र नं० ११ (ख)-आड़ी गड़ारी

लेजाकर पसूज के बगल से डाले और पसूज के नीचे से ही उसके दूसरी बग़ल में निकाल ले। इसी प्रकार फिर सूई को पसूज के ऊपर से लाकर कुछ सटे सटे टांके देती जाय। ये टांके दो प्रकार के होते हैं एक तो सीधे और दूसरे आड़े।

लंगुड़ीदार गड़ारी।

पसूज की सिलाई पर ऊपर लिखे अनुसार सीवे हैं, परन्तु सूई को धागे के फंदे या लपेट में से ही निकालें अर्थात्

जहां धागा कपड़े में से बाहर निकाला है वहां के धागे के ऊपर से सूई निकाले, यह लगभग काज की सिलाई का सा क़सीदा है।
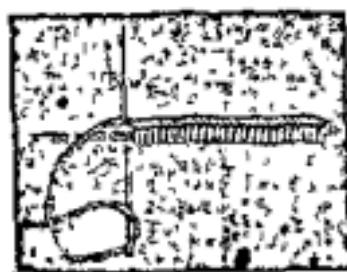
चित्र नं० ३२

घुण्डीदार तोपे।

ये दो प्रकार के होते हैं-(क) सादे (ख) उमेठुवां।

(क) सटी सटी दोहरी बखिया दोड़ की इस प्रकार करे कि दोनों के टांके बगल बगल में सटे हुए हों अर्थात् दूसरी बखिया के टांके उन्हीं सूतों पर पड़ें जिनपर पहिली बखिया के टांके पड़े हैं। यह सादी घुण्डी हुई।

(ख) कपड़े की उलटी ओर से सीधी ओर को सूई निकाले। जहां से धागा ऊपर निकला हो वहां पर अंगूठे से धागे को दाबे रहे और अंगूठे के पासही के धागे की दो

चित्र नं० ३३

लपेट सूई पर दे और सूई को बाईं ओर से दाहनी ओर को घुमाकर पासही एक सीध में टांका देकर सूई निकाल ले।

इसी प्रकार दूसरी उमेठयाँ युंही जहां बनानी हो बनावै (चित्र ३३ देखो) और तीर के घुमाव के अनुसार सूई को भी घुमाकर लपेट में उमेठन दे दे।

उभड़ी मुर्रीदार पत्तियां।

सूई को कपड़े के पीछे से निकाल कर सूई पर धागे की उतनी लपेटें बराबर बराबर दे जितनी लम्बी पत्ती बनानी हो और उन लपेटों को बाएं हाथ के अंगूठे से जमाए रहे और दाहने हाथ से सूई को धागे सहित लपेटों के ऊपर से खींच कर पत्ती के सिरे पर एक टांका देकर सूई बाहर

चित्र नं० ३४

निकाल लेवे। इसी प्रकार पत्ती का दूसरा किनारा बनावें। फिर उसी प्रकार उसके दूसरी तरफ़ की पत्ति बनादे, फिर उसकी डांडी बनावे। डांडी की लपेट उतन ही लम्बी बनावे जितनी दूर पर नीचे की दूसरी पत्ती बनाने को है। ऊपर लिखी शकल में कुछ पत्तियां तयार और एक पत्ती अधूरी दिखाई गई है।

पेंचदार कसीदा।

कपड़े पर पहिले पमूज़ कर जाय, फिर पमूज़ के टांके के नीचे से सूई निकालकर धागे को ख़ाली जगह पर से दूसरी

ओर लेजाय और फिर पमूल के टांके के नीचे से धागा डाल-

चित्र नं० १५
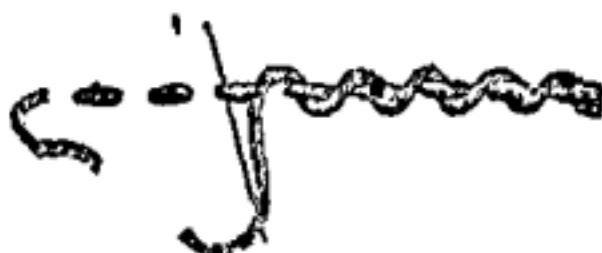
कर और खाली जगह को धागे से भरते हुए तीसरे टांके के नीचे सूई डाले।

ज़ंजीरेदार कसीदा।

सूई को कपड़े के नीचे से निकालकर दूसरा टांका ज़रा तिरछा तीन चार सूतों के नीचे से देवे और धागे का फंदा

चित्र नं० १६

सूई पर दे अर्थात् धागे को दाहिनी ओर से घुमाकर सूई के नोके को नीचे से लाकर दूसरी तरफ लेजाय और फिर सूई को आगे को निकाल लेवे।

कड़ीदार कसीदा।

कपड़े के नीचे से सूई ऊपर निकाल कर धागे के पिछले भाग में फंदा इस प्रकार बनावे कि धागा घूमकर अर्थात् गोल

फंदा बनाते हुए धागे के पिछले भाग के नीचे से

चित्र नं० ३१

अब सूई को इस गोल फंदे के बीच में से कपड़े
फंदे के बाहर कुछ दूर पर निकाले। यह
नोके के नीचे से धागे का दूसरा फंदा देकर
निकाले। यह कसीदा ज़रा कठिन है, पर जब
तो इतना कठिन नहीं मालूम देता और इस
सुन्दर और मनोहर होते हैं।

इस की दूसरी रीति यह भी है कि सू
उलटी ओर से डाल कर सीधी ओर निकाले।
हिस्सा बाएं हाथ के अंगूठे से कपड़े पर जम
सूई को घुमाकर धागे के नीचे से निकाले,
गोल कड़ी धागे की बन जायगी। इस क
से दाबे रहे और सूई को इस कड़ी के बी
कड़ी के बाहर कुछ दूर पर उसका नोक
निकाल लेने के पहिले धागे को घुमाकर
लेजाकर दूसरा फंदा डाल दे और सूई को
इसका फल यह होगा कि पहिला फंदा
हो जायगा यह मानो खड़ी कड़ी है और
गोल हो जायगा मानो यह बेड़ी कड़ी है

झाड़दार कसीदा।

सूई को कपड़े की उलटी ओर से सीधी ओर को निकाल कर चार या छ सूत बाद सूई को घुमा कर आगे को डाले और आगे के दो या तीन सूत के नीचे से सूई की नोक को

चित्र नं० १८ (क)

फिर बाहर निकाले और इसके अगले टांके पर सूत का पिछला हिस्सा अटका कर सूई को निकाल ले और इस तरह के दो दो या तीन तीन टांके दहिने और बाएं देते हुए आगे बढ़ती जाय। यह तो कांटेदार कसीदा हुआ। अब इस कांटे की शाखा भी कुछ लम्बी करके इसी प्रकार काढ़ सकते हैं। और अगर इसके सिरे पर सूई के नोके के चारों ओर आठ दस लपेट धागे की (या जितने लम्बे झाड़ या पत्ते बनाने हों

चित्र नं०१८ (ख)

उतने धागों की लपेट) देकर सूई को लपेट में से धागे सहित निकाल लेवे और इस झाड़ पत्ते के सिरे पर सूई का टांका
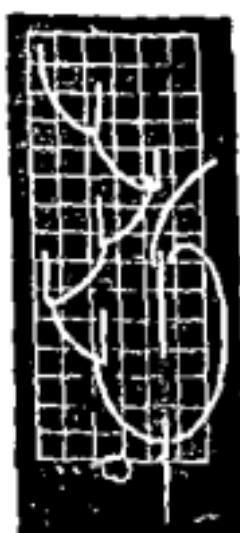
देकर सूई को उलटा, डांड़ी के सिरे पर निकाले (अर्थात् जहां से शाखा अलग की गई थी) अब फिर कुछ लम्बी डांड़ी बनाकर डांड़ी के दूसरे बग़ल दूसरी शखा या कांटे और पत्ते काढ़ ले।

गुलदार कसीदा।

यह कसीदा चौड़ी परन्तु सादी बेल के काढ़ने के काम का है। बेल की चौड़ान में दो दो सूत की दूरी पर धागे भर जाय। फिर कपड़े की दूसरी ओर सूई को बाहर निकाले और सूई को हर कसीदे के धागों के पेटे पर तिरछी लपेट देकर उलटी तरफ निकाल ले (चित्र नं० ३९ देखो)। या दूसरी

चित्र नं० ३९
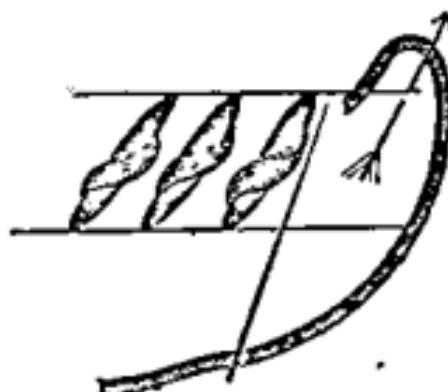
तरह का गुलदार कसीदा यों काढ़े कि बेल की चौड़ान में दो दो सूतों की दूरी पर धागे भर जाय और फिर सूई को हर तीन कसीदों के धागों के पेटे पर लेजाकर सूई को दोबारा इन धागों के नीचे डाले और अब की बेर सूई को धागे की लपेट में फंदा देते हुए निकाले। इसीप्रकार आगे के तीन धागे कसीदे के लेकर उनके पेटों को कसदे। इस का फल यह होगा कि कसीदे के तीन तीन धागों के दोनों सिरे छितरे रहेंगे और उनके पेटे मिल जांयगे।

चौड़े पत्तों के कसीदे ।

जब किसी बेल के पत्ते बहुत बड़े या चौड़े होते हैं तब उनके पेटे भरने में बड़ी दिक्कत होती है । चौड़े पत्ते के बीच में लम्बे धागे के तोपे ठीक नहीं होते । नीचे लिखी रीति से तोपे भी मज़बूत होंगे, सुन्दरता भी अधिक आवेगी और पत्ते की नसें तक अलग अलग दिखा दी जायगी ।

चित्र नं० ४०

चौड़े पत्तों के पेटे में ज़रा मोटे धागे से बख़िया द्वारा उनकी नसें कुछ आड़ी बना जाय, फिर इन नसों के बीच में दूसरे प्रकार के महीन धागों से सादे कसीदे के तोपों से भर जाय, ये तोपे सटे और कसे हुए हों कि जिसमें ये कपड़े पर चिपके हुए जमे रहें, ऐसा न हो कि कोई कसा और कोई ढीला हो।

चौड़ी बेल के भराव ।

चौड़ी सादी बेल के भराव में जो धागे भरे जाते हैं, उनके पेटे भी साथही साथ कई एक छोटे तोपों से कस दिए जाते हैं कि जिसमें बीच से कसीदे के धागे उभरें नहीं । बेल के एक किनारे पर से सूई को निकाल कर दूसरे किनारे पर

डाले और सूई को नीचे ही नीचे बेल के बीच से ऊपर को निकाल लेवे और कसीदे के धागे पर से तिरछी सूई लाकर उसके ठीक बग़ल पर से कपड़े में डाल दे और अब दूसरी बग़ल से निकाले। इसी तरह कसीदे के दो दो या चार चार धागों के बीच पेटे कस दे। इस प्रकार से

चित्र नं० ४१।
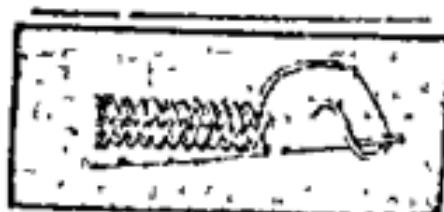
कसीदे के पीछे टाँके बीच में से दबे रहेंगे।

उभारदार कसीदा।

उभारदार कसीदा जैसी बेल हो उसके पेटे में पास पास कई टाँके देकर भर जाय, फिर इस भराव या गद्दी पर पास पास अर्थात् सटे हुए टाँके चौड़ान भर में दे जाय।
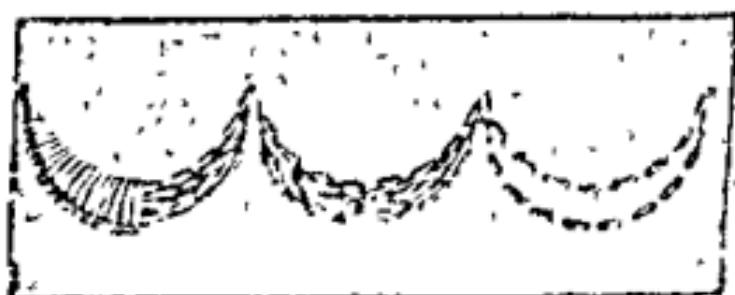
चित्र नं० ४२

यद्यपि कसीदों के कई टाँके और भी हैं, परन्तु जितने लिखे गए हैं उतने ही कम नहीं हैं। इनका अभ्यास होजाने से और कसीदों के तर्ज़ भी सहज ही आवेंगे और ज़रा ध्यान पूर्वक देखने से वे आपही आजायँगे।

सिलाई के विषय में जितना लिखा जा चुका है वह घर गृहस्थी के काम चलाने के लिये काफ़ी ही नहीं है, बलके उससे कहीं अधिक है। जिन लड़कियों वा स्त्रियों को इतनी सिलाई आती होगी उनका काम कभी नहीं रुक सकता और वे चतुर गिनी जा सकती हैं यदि वे सिलाइयों को सफ़ाई, सिजिलता के साथ और नियमानुसार करेंगी।

अब रहा गुलूबंद, मोज़े इत्यादि बुनना, लैस बनाना। ये काम ऐसे नहीं हैं कि जिनके बिना घर गृहस्थी के कार्य रुकें, और न इनका कामही नित्य पड़ता है, इसलिये इनको इस पुस्तक में अधिक नहीं लिखते, अलबत्ता बुनावट की कुछ विधियां अन्तिम अध्याय में बतादी जांयगी और उस विषय पर भली भांति दूसरी पुस्तक लिखी जायगी। उस पुस्तक में और भी कई प्रकार की कारीगरी की कठिन कठिन सिलाइयों का वर्णन होगा।

चित्र नं० ४३

चांद तारा बेल।

इतना सिखा देने के बाद लड़कियों को कपड़े की ब्योंत और उनकी काट छांट, और उनका बनाना सिखादेना अत्यावश्यक है इसलिये कपड़े बनाने का प्रसंग आगे लिखा जाता है।

छठां अध्याय।

झंझरीदार झालर बनाना

वा

झंझरी बनाना।

जब लड़कियां ऊपर लिखी सिलाई सीख चुकें तब उन
कपड़े की ब्योंत और उनकी काट छांट सिखानी चाहिए
कपड़े की काट छाट करना और उसका बनाना अन्य विष
है इस लिये हम अभी सिलाई सम्बंधी कई आवश्यक बा
और लिखे देते हैं। ओढ़ने के रूमाल, ओढ़नी इत्यादि
झंझरी बनाना जिसे साधारण में "छीर" डालना भी बोल
हैं स्त्रियों के लिये बड़ा जरूरी है और इसकी गिनती
सिलाई ही में है अत एव उनको छोड़ कर हम अभी कपड़े
काट छांट की ओर नहीं जाते, पहिले हम इसीको लिखते

कपड़ों के किनारों से बिने हुए कुछ सूत निकाल लेने
कपड़े में छीर पड़ जाती है, इसको सीकर कई प्रकार
सुन्दर सुन्दर झंझरियां बनाई जाती हैं। ये झंझरियां
प्रकार की होती हैं (१) सादी (२) बुनन दार। इन झंझरि
से कई प्रकार की गुलकारियां बन सकती हैं, इनमें से स
चार प्रकार की झंझरियों के विषय में लिखा जाता है। झंझ
दार रूमाल बालकों के लिये और मेज़ इत्यादि की दस
रियां (Table-cloth) उत्तम बनाई जा सकती हैं। झा
झंझरियां एकहरी, दोहरी वा तेहरी भी बनाई जाती हैं,
से कपड़े की सुन्दरता बढ़ जाती है। (याद रखने की ब
है कि जब ताने और बाने दोनों के सूत कट या खिंच ज

हैं तब उसे चीर कहते हैं और जब तानों वा बानों में से किसी एक के सूत निकाल लिए जाते हैं और दूसरा साबुत रहता है तो उसे छीर कहते हैं)

सादी झंझरियां।

पहिला प्रकार।

कपड़े के किनारों से कुछ ऊपर बुने हुए आठ दस सूत एक सीध में के निकाल डाले तो केवल छीर के सूत रह जायंगे। अब इन सूतों के दो सूत के ऊपर से सूई लाकर और छीर के तीन सूतों के दाहिनी ओर से बांई ओर सूई निकाल कर धागे की एक लपेट उन पर दे और सूई को कपड़े के नीचे से सूतों की ओर को तिरछी डाल कर ऊपर निकाले और फिर दूसरे तीन सूत छीर के ले और उनकी दाहिनी तरफ़ से धागे की लपेट देकर ऊपर को तुरपन की सिलाई करती जाय। इसका नाम हम एक तरफ़ी झंझरी रखते हैं। जैसा चित्र नं० ४६ के दहिनी तरफ़ अधूरी बनी झंझरी की शकल है।

दूसरा प्रकार।

ऊपर की विधि अनुसार यदि छीर के दोनों किनारों को टांका जाय तो 'सिढ़ी, के शकल की झंझरी बन जाय

चित्र नं० ४७

सिढ़ीदार झंझरी।

गी। टांका लगाने में चाहे दो दो चीर छोड़े, चाहे तीन

तीन, या चार चार । इसका नाम 'सीढ़ीदार' झंझरी
रख देते हैं ।

तीसरा प्रकार ।

छोर के एक किनारे पर चार चार या छ छ छोर ले
धागे की लपेट दे जाय अथवा ऊपर लिखे अनुसार ट
सहित लपेट देकर गुच्छे बना जाय । अब पहिले गुच्छे
आखरी दो छोर (अर्थात् गुच्छे की छोरों के आधे छोर अर्थ
सूत) और दूसरे गुच्छे की अगली दो छोरों (अर्थात् गुच्छे
दूसरी आधी छोरों) को लेकर एक में मिलाकर सीदे। इसी प्रक

चित्र नं० ५१

जंज़ीरेदार झंझरी ।
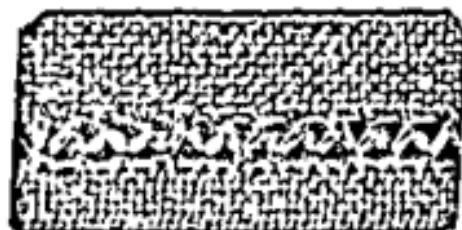
एक गुच्छे की आधी छोरों को और दूसरे गुच्छे की आधी छो
को साथ मिलाकर टांके से जोड़ जाय। इसका नाम 'ज़ंजी
दार झंझरी' रखलो ।

चौथा प्रकार ।

यदि दूसरे प्रकार की झंझरी के गुच्छों के आधे सू
को दूसरे गुच्छों के आधे सूतों के साथ मिलाकर पेटे
धागे की लपेट दे जाय या उनके पेटों को घुमाकर उनके बी
में से धागा पिरो जाय तो "जालीदार" झंझरी बन जाय

इस किसिम की झंझरियां ज़रा चौड़ी होनी चाहिएं जैसी चित्र नं० ४६ में बीच की झंझरी बनी है ।

पांचवां प्रकार ।

अब यदि दूसरे प्रकार की झंझरी के तीन तीन गुच्छों को लेकर उनके पेटे बांध दिए जांय किंवा एकही धागे से लपेट दिए जांय तो "त्रिसूली" झंझरियां बन जांयगी ।

छठां प्रकार ।

तीसरे प्रकार की झंझरी के दो दो गुच्छों को पेटे से मिलाकर बांधती जाय किंवा दो दो गुच्छों को मिलाकर उनके पेटे के कुछ ऊपर और कुछ नीचे एक धागे से लपेट दे दे तो 'डमरू' के शकल की झंझरी बन जायगी । इसका नाम 'डमरूदार' रख लो ।

सातवां प्रकार ।

यदि दो दो गुच्छों को मिलाकर उनका तिहाई भाग ऊपर का और तिहाई भाग नीचे का अर्थात् उनके बीचम बीच से कुछ ऊपर और कुछ नीचे के भागों को एक धागे से लपेट कर बांध जाय तो यह "पायेदार" झंझरी बनेगी ।

सहज सहज विधियां झंझरी बनाने के लिए दी गईं। झंझरी की छोर के चार पांच सूत से २० सूत तक निकाल कर झंझरी बनाई जा सकती है। जितनी चौड़ी झंझरी बनानी हो उतने ही सूतों को निकाल डाले। ये झंझरियां दोहरी

तेहरी भी होती हैं अर्थात् एक झंझरी के ऊपर कुछ कपड़े

चित्र नं० ५६
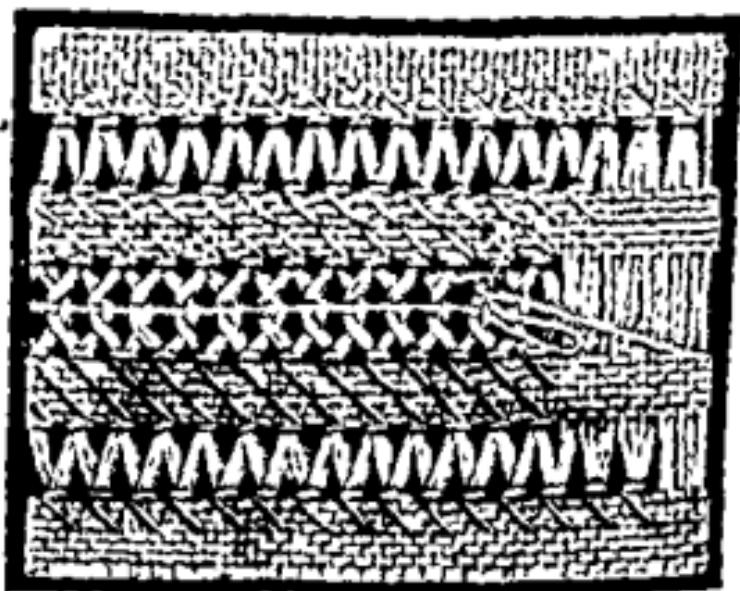
को छोड़ कर दूसरी झंझरी बनाले। इसी तरह तीसरी झंझरी भी बनाये। गुमनदार झंझरियों के विषय में दूसरे भाग में लिखा जायगा।

सातवां अध्याय।

पहिनने के कपड़े सीना।

जिस कपड़े से पहिनने की कोई चीज बनानी हो तो उसकी चौड़ाई का ज्याद ख्याल करे। जहां तक हो सके शरीर के सबसे ज्यादा चौड़े भाग से कपड़े का अरज कम न हो, नहीं तो कलियां और जोड़ लगाने पड़ेंगे। याद रहे कि अंग का सबसे ज्यादा चौड़ा भाग छाती अर्थात मोढ़े के नीचे का भाग है। यदि कपड़े का अरज अंग की चौड़ाई से अधिक है तो कोई हरज की बात नहीं है, होशियार ब्योंतनेवाला उसकी चौड़ाई में से कई काम की चीजें

निकाल सकता है, जैसे बगली, कालर, कलियां, गोट इत्यादि इत्यादि ।

छोटे बच्चों के कपड़े ज्यादा चौड़े अर्थात् ढीले बनाने चाहिएं । इनके कपड़े मुलायम और मजबूत कपड़ों के बनावे कि जिसमें कपड़ा जल्दी फटे भी नहीं और उनके कोमल अंग में चुभे भी नहीं । यह प्रायः देखा जाता है कि हिन्दुस्तानी स्त्रियां छोटे बालकों के कुरते इत्यादि जाली वा मक्खीलेट इत्यादि महीन परन्तु कड़े वस्त्र के बनाकर पहनाती हैं। यदि इसी कपड़े की कुरती इत्यादि उनके लिये बनाई जाय तो उन्हें चुभती है, फिर भी उनका ध्यान इस बात पर नहीं जाता कि छोटे बच्चों के कोमल अंग पर क्या वे न चुभते होंगे । हां, यदि ऐसाही करना है तो पहिले बालकों को मुलायम कपड़े की कोई चीज पहना कर उस पर वह वस्त्र पहनावे तो अधिक हानिकारक नहीं । छोटे बच्चों के कपड़ों को बड़ी सुघराई से काटे और उन पर ऐसी कड़ी सिलाई सी न करे कि जिसमें सिलाई चुभे, किंवा कपड़ों के जोड़ों पर गुद्दल भी न करदे तात्पर्य यह कि जोड़ों पर की आवटों को चपटी मोड़ कर तुरप दे और जहां तक हो सके तह बहुत मोटी न होने पावें ।

कपड़े बनाने के पहिले सब से जरूरी काम जिनका पहिले ध्यान कर लेना चाहिए नीचे लिखे जाते हैं ।

(१) किस किस्म के कपड़े की कौन चीज उत्तम होगी वा होती है । जैसे यदि कोई तंजेब का झोलदार पायजामा बनवाये तो कैसा होगा ।

(२) कपड़े बनाने के पहिले अंग की नाप । क्योंकि

लिये बहुत सी नापें ली जाती हैं। इन नापों में कई नाप तो अंग की लम्बाई और चौड़ाई जानने और तदनुसार कपड़े काटने के अर्थ ली जाती हैं और कुछ नाप ऐसी हैं कि जो कपड़े में केवल अधिक सुडौलता लाने के काम में लाई जाती हैं। इन नापों के विषय में नीचे लिखा जाता है। नापते समय इन नापों को एक परचे पर याददाश्त के लिये टांकती जाय। जब कपड़ा काटा छांटा जायगा, तब यह याददाश्त काम देगी।

(१) गले की नाप—गज़ का एक सिरा गले की हड्डी पर रखकर गज़ को गले पर एक बेर लपेट दे, जितनी लपेट आवे (यह लपेट कसी हुई न हो) उसे टांक ले।

(२) कन्धे की चौड़ाई—गले के मोड़ से कंधे के सिरे तक (जहां पर कि कंधे की सिलाई होती है) नापे।

(३) पीठ की चौड़ाई—(यह नाप कोट वा वास्कट अथवा ज़नानी कुरती के लिये आवश्यक है) एक बग़ल के जोड़ से दूसरी बग़ल के जोड़ तक की नाप।

(४) पीठ की लम्बाई—गरदन के पीछे की हड्डी से कमर तक की नाप।

(५) कांख की लम्बाई—बगल के नीचे के किनारे से कमर तक की नाप (यह कलियां काटने के लिये काम आती है)

(६) आगा—गले की अर्थात् हंसली की हड्डी से कमर तक की नाप।

(७) छाती की नाप—छाती के चारों ओर गज़ लपेट कर उसका घेरा नाप लो (कुछ ढीली नाप लेनी चाहिए)।

(८) कमर का घेर—यह कोट या स्त्रियों की कुरतों के लिये ज़रूरी है।

(९) चोली की नाप—छाती के उभार के एक इंच नीचे से कमर तक की नाप।

(१०) बग़ल का घेर—बगल के चारों ओर गज़ से कंधे तक की चौड़ाई नाप ले (इसे ज्यादा ढीला न नापे)

(११) कोहनी की गोलाई—कोहनी पर गज़ को इतना ढीला लपेटे कि कोहनी गज़ की गोलाई में से निकल सके (अर्थात् तंग न हो)

(१२) पंजे की नाप—अंगूठे को हथेली की ओर मोड़ कर पंजे के घेर की नाप।

(१३) बाज़ू के नीचे की गौण नाप—हाथ को कुछ मोड़ कर कंधे के बराबर उठावे और बगल से कोहनी तक नाप ले (इसका काम केवल आस्तीन का सांचा बनाने में काम आता है)

(१४) कलाई की नाप—मुड़े हाथ की कोहनी से कलाई की हड्डी तक की लम्बाई।

(१५) बाज़ू के ऊपर की गौण नाप—उठे और मुड़े हाथ की कोहनी से कंधे तक की नाप (इसका नाम गौण इसलिये रक्खा जाता है कि आस्तीन का सांचा काटने में इसका काम पड़ता है)

(१६) हाथ की लम्बाई—कंधे से कलाई तक की नाप।

अंगे या कुरते इत्यादि कपड़े जो चुस्त और ठीक बनाए जाते हैं उनके लिये उक्त नापों की ज़रूरत

पड़ती है, विशेष करके अंगरेज़ी फ़ैशन के कपड़ों में तो इन नापों की बड़ी ही आवश्यकता होती है ।

हिन्दुस्तानी कपड़ों में इन सब नापों की आवश्यकता नहीं पड़ती, उनके लिये केवल नीचे लिखी नापों से ही काम निकल जाता है ।

(१) लम्बाई–कंधे के सिरे से जितना नीचा कपड़ा बनाना हो अर्थात् घुटने तक या उससे कुछ ऊपर या नीचे तक की नाप ।

(२) छाती का घेर–छाती का घेर न बहुत ढीला और न बहुत तंग नापे ।

(३) आस्तीन–कंधे के मोड़ से कलाई तक की नाप ।

(४) गला–गले का घेर ।

(५) पैजामे की नाप–नाभी से एड़ी तक की नाप (सादे पैजामे के लिये) इसमें ऊपर का नेफ़ा और मोहरी की गोट भी शामिल है, परन्तु औरेबदार अर्थात् चूड़ीदार पैजामे की नाप नाभी से टख़ने तक और फिर के पैर की मोड़ से अंगूठे तक। या यों कहो कि सादे पैजामे से लग भग १॥ या २ गिरह ज़्यादा लम्बाई लेनी चाहिए ।

नाप के विषय में तो लिख दिया गया। अब कपड़े की ब्योंत यों करनी चाहिए कि यदि कपड़े का अरज़ पीठ की चौड़ाई के बराबर हो या अधिक, तो जितनी नीची चीज़ बनानी हो उसका दूना कपड़ा नाप कर आगा पीछा करले और आस्तीन की लम्बाई के बराबर कपड़ा और ले। यदि कपड़े का अरज़ बड़ा है, तो उसीके अर्ज़ में से कलियों का अंदाज़ कपड़े के घेर के अंदाज़ से करले और

यदि कपड़े का अर्ज़ छोटा है तो कलियों के लिये
और लेना पड़ेगा।

पहिले कपड़ा ब्योंत लिया जाय तब उसकी काट
काट करने के विषय में हमें खड़ा, बेड़ा, आड़ा, आड़ा-
इत्यादि शब्दों का प्रयोग करना पड़ेगा, इसलिये प
यह समझा देना चाहिए कि इनका मतलब क्या है
उनकी काट क्योंकर करनी चाहिए।

यद्यपि इन शब्दों के अर्थ स्पष्ट हैं तो भी लड़कि
को समझाने के लिये उनका ठीक ठीक मतलब और का
की विधि बता देनी जरूरी है।

मान लो कि एक कपड़ा १४ गिरह लम्बा और १० गिरह
चौड़ा है। चित्र में एक एक गिरह लम्बा चौड़ा चौखाना
मानकर उसकी लम्बाई चौड़ाई दिखाई गई
है और मोटी लकीरों से उसकी काट।
इस चित्र में "कच" और खग लम्बाई
है इसे "खड़ी" काट लिखेंगे। क ख, च ग
चौड़ाई है इसे "बेड़ी" काट लिखेंगे। घ ल
"आड़ी" काट कहलायगी। कुछ आड़ी
कुछ गोल मिली हुई काट को "आड़ी
गोल" लिखेंगे।

क

च ग

चित्र नं० ३३

आड़ी काट काटने के लिये कपड़े को तिकोना मोड़
र दबादेने से कपड़े पर तह का चिन्ह पड़ जायगा, उसी
न्ह पर से कैंची द्वारा काट लेवे। आड़ीगोल काट
अभ्यास लड़कियों से कराना उचित है, क्योंकि यह
द्वारा कठिन है।

अब कपड़ों के बनाने का विषय रह गया । विदित रहे कि हर कपड़े की काट छांट जुदा जुदा है, परन्तु उनका मूल सिद्धान्त एक समान ही है, थोड़ा बहुत अंतर पड़ता है । अलबत्ता लड़कियों से पहिले बहुत छोटे बालकों के कपड़े बनवावे क्योंकि उनकी काट छांट सहज भी है और कपड़ा भी कम लगता है ।

बालक का चोला वा कुरता ।

ऊपर लिखा जा चुका है कि छोटे बच्चों के कपड़े ढीले बनाने चाहिएं,अतएव उनकी चौड़ाई लगभग लम्बाई के बराबर ही रक्खे । जितना लम्बा चौड़ा कपड़ा बनाना हो उसकी दूनी लम्बाई का कपड़ा लेकर उसको लम्बान से आधा करके तहिया दे । अब इस कपड़े को फिर चौड़ाई से तहिया कर चौतही करदे ।

इसके बाद तहों के खुले पल्लों के ऊपर के कोने को बग़ल के घेर से कुछ ढीला काटे और दूसरे किनारे पर अर्थात् जो तह का मोड़ है अर्द्ध गोल कंठा बनाने को पेंसिल से निशान कर दे । गले के घेर के चौथाई के बराबर चौड़ी गोलाई बनावे और इसी प्रकार अर्द्ध गोल का निशान दूसरी ओर भी करके दोनों निशानों को औरैब गोल निशान बनाकर मिला दे। अब कपड़े की चौड़ाई की तह खोल डालेगे तो दोनों किनारों पर बगल को काट होगी और इनके बीच मे कंठे की गोलाई का निशान होगा जिसकी चौड़ाई गले के घेर की आधी होगी । फिर एक पल्ला पीठ का काट कर अलग कर ले और दूसरा पल्ला आगे का जिसपर कि कंठे का निशान

बना है लेकर इस निशान की गोलाई को काट दे और इस गोलाई के ठीक बीचसे कपड़े को लम्बी फाड़ १॥ या २ गिरह की फाड़े जिसे गिरेबान कहते हैं। अब आगा पीछा तयार होगया। इन्हें कंधे पर से मिला कर सी दे।

इसके बाद आस्तीन काटे। बच्चों की आस्तीन कुछ ढीली रखनी चाहिए और इसकी काट भी सीधी हो, मगर कलाई के पास से कुछ तिरछी काट काट कर मोहरी छोटी कर दे। दोनों आस्तीन सटी रख कर काटने से छोटी बड़ी नहीं होती।

पहिले आस्तीनों को सी डाले। फिर आगे पीछे को कंधे पर सी दे और आस्तीनों को बग़ल के साथ मिलाकर सी दे। कभी कभी बग़ल में बगली भी जोड़ते हैं। इसके बाद कांख पर दोनों कपड़ों की बखिया कर दे। कपड़े के नीचे तुरुप दे या महीन गोट लगा दे। गले को भी तुरुप दे। गले पर कुछ चौड़ी गोट लगाना अच्छा होता है, विशेष करके कंठे के नीचे की चीर अर्थात् गिरेबान पर चौड़ी गोट देना ज़रूरी है। इस गोट पर काज बनाकर बटन टांक दे।

पैजामा।

इसके बाद पैजामे की काट लड़कियों को सिखानी चाहिए क्योंकि और कपड़ों की अपेक्षा इसकी काट सहज है। पैजामे कई तरह के होते हैं। पै[illegible]) [illegible] पैजामा (२) औरेबदार या चूड़ीदार (३) [illegible])
(५) पतलून (६) सुत्थना इत्यादि।

इस पुस्तक में केवल पहिले दो प्रकार के पैजामों की काट लिखी जाती है। इन्हीं दोनों प्रकार के पैजामों का रवाज भी ज्यादा है। इनकी काट समझ में आजाने पर शेष सहज हो जाते हैं।

सादा पैजामा।

पैजामे का घेर लगभग उसकी लम्बाई के बराबर होता है, कोई कोई ज्यादा घेर का पैजामा भी पसंद करते हैं। घेर बढ़ाने के लिये म्यानी जोड़नी पड़ती है। छोटे पनहे के कपड़े में तो आसन में म्यानी जोड़नी ही पड़ती है।

छोटे अर्ज़वाले कपड़े में (यदि और कपड़ा डबल पनहे का है और पैजामें का घेर उसमें आसके तो उतनाही कपड़ा काफ़ी है जितना लम्बा पैजामा बनाना है) तो पैजामे की लम्बाई से दूना कपड़ा लगेगा। अब इसलम्बाई का दूना कपड़ा लेकर उसके दो बराबर हिस्से बीच में से करदे, मानो दोनों पैरों के कपड़े होगए। अब इन दोनों कपड़ों को चौड़ाई पर से तह करके दोहरा करे और उनमें लंगर डाल कर सी ले। फिर दोनों थैलों को एक दूसरे पर रख कर पैर की मोहरी के अन्दाज़ के बराबर तह की ओर से एक चिन्ह बना दे और घुटने के नीचे तक इसी चौड़ाई का सीधा चिन्ह करदे। फिर नीचे लिखे अनुसार चिन्ह बनाकर पैजामा काट ले और अगर डबल पनहे का कपड़ा है तो पैजामे की लम्बाई के बराबर कपड़ा लेकर और उसको बीच में से दोहरा करके उसका लम्बोलम्ब सिरा सी ले। यह एक थैला सा हो जायगा, फिर इस थैले की सीयन बीच में कर ले जैसे चित्र नं० ६८ में च छ है (सीयन बीच में ले

आने से पांयचे या मोहरी पर जोड़ नहीं पड़ेगा) लि
लिखे अनुसार पैजामे की काट काट ले।

मान लो कि क ख, ग घ पैजामें की लम्बाई
घ छ लंगर डाला हुआ जोड़ है, अब तह की ओर से अब
से मोहरी की चौड़ाई के अन्दाज से एक या दो जव
चौड़ाई पर द का चिन्ह बना लो, इसी तरह थैले के दू
तरफ़ मोहरी के बराबर ख ल चिन्ह बना लो। विदित
कि मोहरी की माप लेने में एड़ी से पैर के मोड़ का घेर मा
लेते हैं। अब तयार पैजामें की लम्बाई की लगभग तिहा
के बराबर माप तक ऊपर को खड़ी लकीर मोहरी की चौड़ा

चि० नं० १८

बराबर खींच दे और यहीं से मोहरी के बगल से अलग कर
ई पर एक टेढ़ी लकीर म तक प ठ के बीच में खींचे।
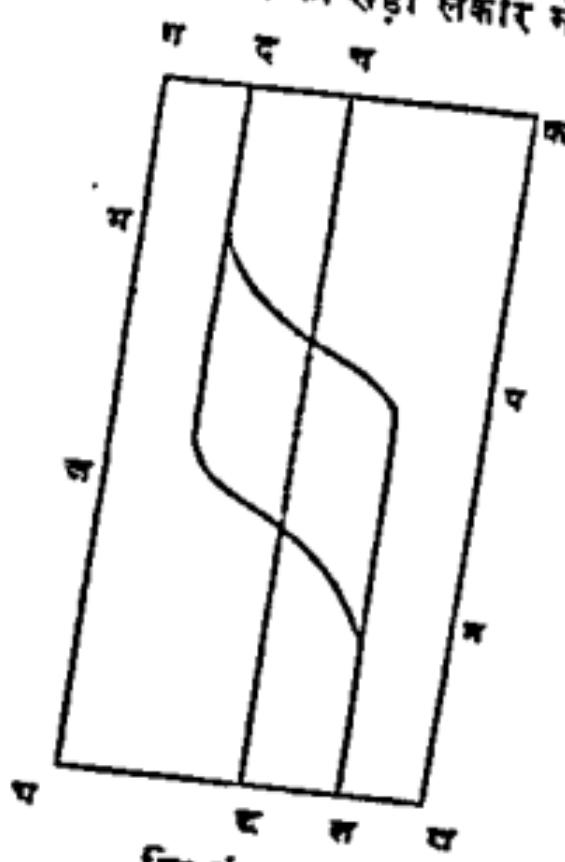
फिर बाकी पर ज च की ढेवढ़ी नाप के बराबर नाप पर म का चिन्ह बनावे इसी तरह थैले के दूसरी बग़ल भी उलटी तरफ़ से मोहरी वग़ैरह बनाकर (जैसे प, न के चिन्ह बना कर) आड़ी औरेब की काट करके मोहरियों की लकीरों से न और म साम्हने मिला दे और फिर काट ले। छोटे अर्ज़ के कपड़े में दोनों थैलों को एक दूसरे पर रखकर काटने से दोनों पायचों की काट एक समान आवेगी, अतएव दोनों को एक साथही काटे।

यह पैजामें की काट होगई। जो कपड़ा फालतू बचा है उसीमें से म्यानी बनाले और उन्हें जोड़कर सी डाले। दोनों पैरों के कपड़ों में जो नेफ़ा बनाया जाय उनका सूराख दोनों ओर से खुला रहे। सूराख के सिरे चाहे आड़ी काट से काट कर सीए चाहे सीधे ही रहने दे। पैजामे के घेर के दोनों जोड़ों को जोड़तेसमय भी नेफ़ा दोनों ओर खुला रहे। यदि कपड़ा अर्ज़ में इतना छोटा हो कि बचे कपड़े में से म्यानी नहीं निकल सके, तो म्यानी के लिये कपड़ा ब्योंतती समय ज्यादा उयोंत लेवे।

चूड़ीदार पैजामा।

इसकी बनावट टेढ़ी है। इसकी बनावट को खूब ध्यान देकर सीखे। चूड़ीदार पैजामें के लिये सादे पैजामें की अपेक्षा कम से कम २ गिरह ज्यादा कपड़ा लिया जाता है। जितनी लम्बी पैजामें की नाप हो उतना कपड़ा लो और इसे अर्ज़ पर से दोहरा करदो। चौड़ाई के पल्लों को

दोनों ओर चौड़ाम में भी दो तो यह एक किश्तीनुमा थैला बनजायगा जिसकी लम्बाई एक ओर से खुली होगी। अब खुली ओर के एक पल्ले को लेकर थैले की चौड़ाई के बराबर लाकर उसीके बराबर मोड़ दे, फिर एक दूसरी मोड़ इसी तरह पर और भी दे अर्थात् थैले की चौड़ाई की दूनी चौड़ाई के मापके बराबर एक पल्ले कोलेकर और उसे तहिया करके सीदे। इसी प्रकार दूसरे पल्ले को भी कपड़े की चौड़ाई के बराबर दोहरा कर दूसरी ओर सी दो। फिर बीच के खुले मुंह को भी सी डालो। अब इसकी शकल तह करके
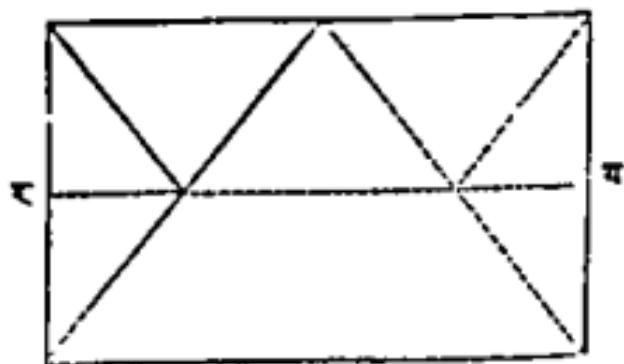
चित्र नं० ४८

बिछा देने पर चित्र नं० ४९ के समान होजायगी। लकीरें से ऊपर की सीयन दिखाई गई है और बिन्दुओं से नीचे की अर्थात् थैले के दूसरी तरफ़ की सीयन। अब इस थैले को तिकोन के सिरे के सीध में अर्थात य र की सीध में से उठाकर तह को बदल दो तो चित्र नं० ५० की शकल हो जायगी। इसके बाद पाँयचों की मोहरियां उस तरफ़ बनावे जिधर मोहरी पर सीयन न पड़े, बलके इस थैली में जो सीयन हैं वह आसन में पड़े (पिंडली पर कदापि

न पड़े इसका ध्यान रक्खे) नहीं तो सब की कटाई नहीं होजायगी। चित्र देखने से मालूम होजायगा कि द ठ, ग म

चित्र नं० १२

में सीयन नहीं आती, बस इन्हीं में मोहरियों की चौड़ाई के चिन्ह म और ठ बना दे।

अब ल चिन्ह से खड़ी लकीर पैजामे की लम्बान की तिहाई से कुछ अधिक लम्बी ल म लकीर खींच जाय। इसी प्रकार म से म त दूसरी लकीर दूसरे पांयचे की दूसरी ओर बनावे। इसके बाद त घ म और त ज म औरेब गोल की तराज़ का चिन्ह बना दे। अब जो म त ज म ल को काट दोगे तो म त ज म ल क ग एक पैर का ढांचा होगा। इसी प्रकार म त घ म ल द घ दूसरा पांयचा हुआ। बाकी त घ म ज कपड़ा जो औरेब गोल बना है उसकी म्यानी बन सकती है, यदि कपड़ा काफ़ी हो। अब म घ और

द स पर की तह काटकर और दोनों ओर की आसम्यानी सहित मिलाकर दोनों पांयचों को सी लेवे। या औरेबदार पैजामा होजायगा। ऊपर नेफ़ा सीहाले और नीचे मोहरियों के किनारे मोड़कर जितनी चौड़ी गोट चाहे तुरपले। (विदित रहे कि त, ज, थ, न चिन्ह चित्र के अंदर के समझने चाहिएं, बाहर की लकीर के नहीं)।

अब इन दोनों पैजामों की काट आजायगी तो बाकी पैजामों को काट लेना मुशकिल न होगा। अब हम एक नकशा नीचे लिख देते हैं, जिसके देखने से मालूम हो जायगा कि किस पनहे का कपड़ा कितने नीचे पैजामे के लिये कितना लगेगा। औरेबदार पैजामे के लिये दो गिरह लम्बाई ज्यादा लेनी चाहिए।

पैजामे की लम्बाई														
कपड़े का पनहा	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	लम्बाई
१२ गिरह पनहा	०-१०	० १२	०-१४	०-१५	१-१	१-८	१-१०	१-१२	१-१४	२-०	२-२	२-४	२-४	
१९ गिरह पनहा	०-७	०-८	०-९	०-१२	०-१४	१-१	१-४	१-७	१-९	१-११	१-१२	१-१४	२-०	

कुरते

यह भी हिंदुस्तानी पहिनावे की चीज़ है जिस का राज इस देश में बहुत पाया जाता है। कुरते ३ प्रकार होते हैं, (१) बड़ी आस्तीन का (२) तंग आस्तीन का

(३) कफ़दार । इसकी काट भी ज्यादा मुशकिल नहीं है। कोई तो घुटने तक या उससे कुछ ऊंचे कुरते पसंद करते हैं, कोई घुटने के नीचे तक के भी पहिनते हैं।

छाती के घेर की आधी नाप का आगा और उतना ही चौड़ा पीछा ऐसे ऐसे दो पल्ले काट ले। बाकी कपड़ा यदि बचे तो उसकी कलियां बनाले। कुरते में घेर लाने के लिये बगल से नीचे तक जोड़ लगाकर घेर बढ़ाने के लिये जो तिकोने कपड़े के जोड़ बनाए जाते हैं, उनको "कलियां" कहते हैं। इनकी भी दो शकलें होती हैं एक तो तीन कोने की तिकोनी कली और दूसरी यह है कि तिकोनी कली का लम्बा सिरा कुछ ऊपर से छांट कर टेढ़ा चौपहला बना लेते हैं। अब गले के घर की आधी नाप के बराबर अगले पल्ले के सिरे के, बीच से इधर उधर दो चिन्ह बना लो और गोल कंठा काट लो। कंठे के बीचोबीच से नीचे को दो तीन गिरह की चीर फाड़ करके गिरेबान बना लो। पहिले बगलें काट कर कंठा बनावे। बगल काटने की रीति यह है कि आगे और पीछे के पल्लों को मिला कर उन्हें लम्बो लम्ब दोहरा करदो, फिर चौड़ान में भी दोहरा दे जिसमें चारों कोने बराबर हो जांय। तब ऊपर के इन खुले कोनों को बगल की घेर के अनुसार औरेब गोल काट से काट लो। पल्लों के चारों कोने साथ रख कर काटने से बगल की काट एक समान कटेगी। पहिले बगल बहुत ढीली न काटो, क्योंकि तंग बगल तो फिर भी कट कर ठीक हो सकती है, परन्तु ज्यादा ढीली बगल फिर तंग नहीं हो सकती। यह भी याद रक्खो कि चौड़ी आस्तीन की बगल कुछ ज्यादा चौड़ी

फटी जाती है। बगल ढीली रखने के लिये एक चौखूटे कपड़े का टुकड़ा जिसे "बगली" या "चौबगला" कहते हैं जोड़ देते हैं, कुरतों में बग़ली ज़रूर ही लगाई जाती है। यदि आस्तीन चौड़ी हो तो उसकी काट भी सीधी रहती

चित्र नं० ५१

है और तंग आस्तीन सीधी और गावदुमी दोनों प्रकार की बनाई जाती है जो जिसे पसंद हो। जब आस्तीन और बगल और कलियां काट ले तो उन्हें सी कर जोड़ ले। गिरेबान के दोनों पल्लों पर ज्यादा चौड़ी गोट लगाकर उसमें काज बना ले। कभी कभी गिरेबान को बीच में न काट कर गले के बांई बगल में काटते हैं।

चित्र नं० ५१ में एक तरफ सिर्फ बग़ल सी हुई दिखाई गई है और दूसरी तरफ चौड़ी आस्तीन सिली हुई दिखादी गई है कि जिसमें दोनों का ढंग समझ में आजायें।

जितना ज़्यादा घेर कुरते में बनाना है। उतनी ही चौड़ी कलियां काटनी चाहिएं । चार कलियां हर कुरतों में लगती हैं, दो तो आगे के दोनों बगल में और दो पीछे के दोनों बगल में । आगे पीछे की कलियां जब मिलकर सी जाती हैं तो उनके नीचे का भाग लगभग १ गिरह तक नहीं जोड़ते बलके उसको अलग ही रहने देते हैं और उसे तुरप देते हैं । इनके अलग होने के स्थान को ज़रा मज़बूती से सीना चाहिये, अथवा तिकोना दोहार कपड़ा लेकर इनके जोड़ पर सी दे कि जिसमें वह खिंच कर भी फटे नहीं । अगर जेब लगाना हो तो इसके ऊपर हाथ डालने लायक़ छेद छोड़ कर कुर्ते की उलटी ओर कपड़े की थैली भी दे और जेब के किनारों को तुरप कर मज़बूत करदे ।

कुर्ते के लिये कपड़े ।

		कुर्ते की लम्बाई ।										
	गिरह	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
कपड़े के थान का अर्ज़	८	१-६	१-१०	१-१४	२-०	२-६	३-३	३-८	३-१२	४-०	४-१०	४-१२
	१०	१-२	१-४	१-७	१-१०	२-०	२-१०	२-१२	३-४	३-८	३-१२	४-८
	१२	०-१४	१-०	१-२	१-६	१-८	१-१४	२-४	२-१२	३-४	३-६	३-८
	१४	०-११	०-१३	०-१४	१-२	१-६	१-८	१-१४	२-४	२-८	२-१०	२-१२
	१६	०-११	०-१२	०-१४	१-०	१-२	१-५	१-१०	२-०	२-६	२-६	२-८
	१८	०-६	०-८	०-१२	१-०	१-२	१-४	१-१०	१-१२	१-१४	२-०	२-४
	२०	०-७	०-८	०-९	०-१३	१-०	१-३	१-६	१-८	१-१४	२-०	२-२

बच्चों की टोपियां ।

सिर पर जो चीज़ पहिनी जाती है, उसे टोपी कहते हैं। टोपियां कई तरह की होती हैं--चौगोशिया, देपल्ली, गोल, कमरखी, किश्तीनुमा इत्यादि इत्यादि। इनमें भी बहुत करके चौगोशिया टोपियां लड़कों के पहिनाने के काम में बहुत आती हैं। चौगोशिया टोपी भी चार गोशों, पांच गोशों या छ गोशों की होती हैं। इन सभों की तर्ज़ एकही है सिर्फ गोशों की गिनती का भेद है। बच्चों के लिये ज़्यादातर चौगोशिया टोपी बुक, करेब, जाली इत्यादि महीन कपड़ों की सी जाती है और उन पर बांकड़ी, गोटा, पट्ठा, सलमा, सितारा और गोखरू इत्यादि मढ़ कर ज़्यादा सुंदर और भड़कीली कर देते हैं। महीन कपड़ों के गोशे दोहरे कपड़ों के होते हैं, जैसे नीचे का पल्ला जाली का और ऊपर का पल्ला करेब का।

चौगोशिया टोपी के सीने के लिये काठ या मट्टी का "गुलम्बर" ज़रूर रखना पड़ता है। गुलम्बर भी छोटे और बड़े, हर क़िस्म मिलते हैं, जिस नापकी टोपी बनानी होती है उसी अंदाज़ का गुलम्बर काम में लाया जाता है।

दो बरस से आठ नौ बरस के लड़के की टोपी के लिये दो गिरह चौड़ा और आध गज़ लम्बा कपड़ा लगता है। टोपी के गोशे काटने की तरकीब यह है कि जितना चौड़ा गोशा बनाना हो उसकी आधी चौड़ाई के बराबर कपड़े को एक सिरे पर तह कर दे, फिर इस दोहरी तह के बंद कोने पर से कैंची द्वारा गावदुमी या औरेब काट करती हुई दोहरे पल्ले के दूसरी तरफ़ ...

चौड़ान पर काट खतम करदे । मतलब यह है कि दोहरे पल्ले के उस सिरे से काटना शुरू करे जहां से तह शुरू होती है और गावदुमी तिरछी काट काटती हुई कैंची को तह के उस सिरे के पास तक ले जाय जहां पर तह का दूसरा पल्ला या कोना कपड़े से जा मिला है । इस गोशे को काट कर कपड़े से अलग न करले, बलके बाक़ी कपड़े के नीचेवाले हिस्से को ऊपर करके इधर भी गोशे की चौड़ाई की आधी चौड़ाई पर दूसरी तह कपड़े की करदे और ऊपर के कोने पर फिर गावदुमी काट से ऊपर लिखे अनुसार दूसरा गोशा काट ले, इस तरह उलट फेर करता हुआ पांच या छ गोशे (जितने गोशे टोपी के बनाने हों) काट लेने से कपड़े की कतरन बहुत नहीं जाती । अगर हर गोशा अलग अलग और एकही तरफ़ से काटा जाय तो कतरन में बहुत कपड़ा जाया जायगा । इसलिये हर गोशे को न तो काट काट कर अलगही करले और न एकही तरफ़ से गोशे तराशे बलके कपड़े को उलट पलट कर गोशों को काटे । जब सब गोशे काट लिए जांय तब उन्हें अलग अलग करके पहिले किसी एक गोशे की काट को सिजल करले और फिर उसपर दूसरे गोशों को रखकर उसके ठीक बराबर सब गोशों को भी बना ले, इस तरह सभी गोशे एक समान हो जांयगे । जब सब गोशों को काट छांट ले तब एक गोशे को दूसरे पर रखकर उनको एक तरफ़ से सी ले । सीयन भी गोशे की काट के समान गावदुमी हो अर्थात् सिलाई भी गोल हो, इसी सिलाई पर टोपी की सिजलता निर्भर है। फिर तीसरा गोशा दूसरे पर रखकर सीए । अब इन तीनों सिले हुए गोशों को गुलम्बर (इसे

कलबूत भी कहते हैं) पर रखकर इनकी गोला
यदि दुरुस्त है तो चौथा और पांचवां गोशा भी
अब फिर गुलम्बर पर रखकर टोपी के ये सिले
मिलाकर देखे अगर कुछ बड़े हों तो दोनों तरफ़
में से थोड़ा कपड़ा छांट करके उनको भी सी दे (य
कि इन आख़री पल्लों की छांट इस अन्दाज़ से
गोशे बदनुमा न हो जांय, इस लिये थोड़ी सी बारीक
बड़ी होशियारी के साथ इस तरह करे कि यह छा
मालूम हो। ऐसा कभी भी न करे कि एकही गोशे को
कर उसे और पल्लों की अपेक्षा बहुत छोटा बना दे)।
टोपी तयार होगई। टोपी के नीचे घेर पर किसी करारे कप
की गोटे टांके, अगर करारा कपड़ा न हो तो काग़ज़ को कप
की तह में लपेट कर टांक दे, इस से टोपी करारी और सड़ी
रहेगी। इसके बाद टोपी की इस करारी गोट पर साटन की
गोट टांक कर उस पर चाहे गोटा टांक दे चाहे उसमें
सितारे से बेल बूटे बनादे और गोशों की सीधनों पर
पटरी अथवा कलाबतून की डोरी या महीन गोखरू टांक दे।

चित्र नं० ३२—टोपी का गोशा।

चित्र नं० ३३—टोपी।

मरदानी टोपी में नीचे की गोट सादी ही रहती है,
कभी गोशों के बीच बेड़े पर (माथा)

के जोड़ों पर गुलदस्ते की सी बेल कपड़े की बनाकर सी देते हैं।

दूसरे तरह की टोपियां बच्चों के लिये कम बनाई जाती हैं, इस लिये उनके बारे में यहां कुछ नहीं लिखा जाता, इस पुस्तक के दुसरे भाग में उनके सीने की तरकीबें लिखी जांयगी।

मावदुमी आस्तीन (अंग्रेज़ी फेशन की)।

कपड़े काटने में सब से कठिन काम आस्तीन की काट है। इसको काट में बहुत से बखेड़े करने पड़ते हैं। यह सब कुछ है परन्तु जब ज़रा मेहनत करके इसे काट ले तो यह ऐसी सुन्दर और सुडौल आस्तीन होजाती है कि सब मेहनत सुफल होजाती है। इस लिये इस मेहनत से जी न चुरावें, बलके सुडौल चीज़ बनाने के लिये जितनी मेहनत हो सके करे। जब काम सिजल उतर जायगा तो आपही चित्त इतना प्रसन्न होगा कि उसके आगे मेहनत की थकावट सब उतर जायगी। जब कभी उत्तम आस्तीन बनानी हो तो पहिले एक लम्बे चौड़े कागज़ पर नीचे लिखे अनुसार अस्तीन का ढांचा बनाकर काट लेवे, तदुपरान्त इन सांचों या सांचे के अनुसार कपड़े पर इन्ही सांचों को रखकर कपड़ा काटे। इस तरह करने से कपड़ा ख़राब न होगा। उत्तम आस्तीन बनाने के लिये नीचे लिखे अनुसार पहिले से नाप ले रक्खे।

अब हम आस्तीन बनाने की विधि लिखते हैं। मान लो कि एक आस्तीन ऐसी बनानी है जिसकी नाप निम्न लिखित् नाप के अनुसार है—

अब क पर खड़ी लकीर ऐसी खींचे जो कोहनी के घेर में २ इंच बढ़ाकर आधे करने से बचे अर्थात् ६॥ इंच की लम्बी खड़ी लकीर क य बना दे । य से एक इंच ऊपर म लिखे । इसके बाद ख चिन्ह पर भी एक खड़ी लकीर ख ल खींचे जो भाजू की गोल नाप के बराबर हो अर्थात् १२ इंच ।

अब ग पर भी एक खड़ी लकीर ग द खींचो जो बग़ल के घेर से २ इंच छोटी हो अर्थात् १३ इं० (क्योंकि बगल का घेर १५ माना है इसमें से २ कम किया १३ रहे)। द से २॥ इं० नीचे थ का चिन्ह लिखे और ग से ४ इंच ऊपर खड़ी लकीर पर र बनावे । जहां जहां अक्षर रक्खे वहां वहां की लकीर को भी काट दे कि जिसमें ठीक नाप का ख्याल स्पष्ट रहे ।
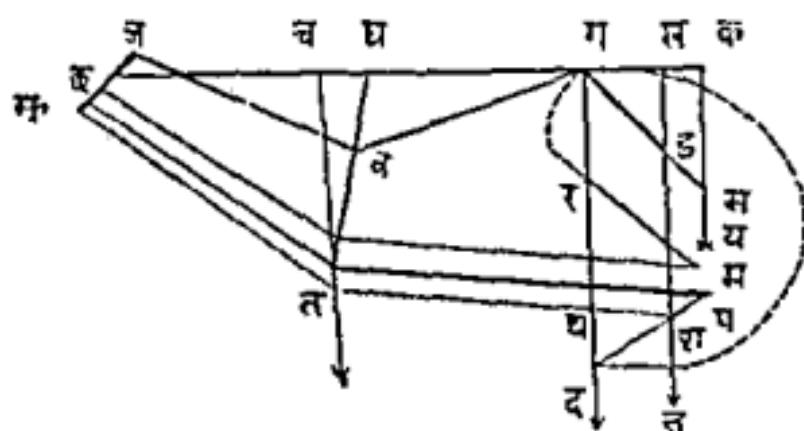
चित्र नं० १३—आस्तीन की काट ।

अब फिर क से जितनी दूर पर ख है घ से भी उतनी ही दूर पर च बनावे । चिन्ह च पर भी एक खड़ी लकीर च त खींच दे जो कोहनी की गोलाई की आधी नाप से १ इंच

ज्य दा हो (कोहनी की गोलाई ११ इंच है इसका आधा ५॥ इंच हुआ इसमें १ इंच बढ़ाकर ६ ॥ कर लिया) मगर जहां त का चिन्ह पड़े उस से भी ऊपर को यह लकीर कुछ बढ़ी रक्खे (क्योंकि कोहनी के मोड़ की यही लकीर होगी।

- घ से १॥ इंच ऊपर फ और फ से॥ इंच ऊपर ब का चिन्ह बना दो और घ फ ब स को लकीर खींच कर मिला दो।

अब जहां म का चिन्ह है उसके ऊपर॥ इंच पर प का चिन्ह दो। य से जितनी दूर पर प है उतनी ही दूर पर दूसरी तरफ़ (अर्थात् क य लकीर पर) स का चिन्ह बनावे और य प को लकीर से मिला दे, यह लकीर जिस जगह पर स ल लकीर को काटती है उससे ॥ इंच ऊपर को श का चिन्ह बनाये। अब ग स को जोड़ दे और जिस जगह यह लकीर स ल को काटती है उससे आधी इं० नीचे ह का चिन्ह बना दे और म र को मिला दे। इसके बाद ग र के बीच में एक लकीर और ये गोल खींच दे। फिर बिन्दु ष से आरम्भ करके इसके बाद बिन्दु के चिन्ह देते हुए एक घेरा ऐसा बनाओ कि जो श, प, म और ह को घेरता हुआ जाय और ग से जा मिले।

इसके बाद प त और ग ब को मिला दे। अब ब से एक लकीर ब ज इस तिरछाई से बनाये कि उसकी लम्बाई सो कलाई की नाप से १ इंच कम हो मगर उसका दूसरा सिरा ज जाकर छ बिंदु से लगभग १। इंच की दूरी पर बाहर की ओर रहे। अब ज से कुछ तिरछी लकीर ज छ क ऐसी खींचे कि जो पंजे के आधे घेर से १ इंच बड़ी रहे। अब त क को भी मिला दे। अब आस्तीन का ढांचा बन

गया । इसमें आस्तीन के दोनों पल्ले बराबर हैं । परन्तु बोडीस और क़मीज़ में प्रायः आस्तीन के दोनों पल्ले बराबर नहीं रक्खे जाते, बलके ऊपर का पल्ला नीचे के पल्ले से ज्यादा चौड़ा होता है । इसी ढांचे से दोनों पल्ले यों बनाए जासकते हैं कि आस्तीन के नीचे की तरफ़ कलाई पर १ इं०, कोहनी के पास २ इं० और बग़ल पर ३ इंच नीचे, बिंदुओं के चिन्ह से उसी ढंग की रेखा बना लो जैसा कि ढांचे का कटाव है। इसी तरह आस्तीन के नीचे के भाग के लिये आस्तीन के अन्दर भी ऊपर लिखे अनुसार चिन्ह बनाकर सांचा कम चौड़ा करलो । जितना कि एक पल्ला आस्तीन का ज्यादा चौड़ा किया गया है उतना ही दूसरा पल्ला छोटा बनाया गया है । इन सांचों को कपड़े पर रखकर आस्तीन के लिये कपड़ा काट लो और छोटे बड़े पल्लों को मिला कर सी डालो । याद रहे कि कोट की आस्तीन के दोनों पल्ले बराबर के रहते हैं। आस्तीन के पल्ले सीते समय इस बात का ध्यान रक्खे कि पहिले आस्तीन के अंदर वाला जोड़ सी कर तब पीछे वा ऊपर वाला जोड़ सीए, नहीं तो आस्तीन में ऐंठन पड़ेगी । आस्तीन के मोढे का कटाव बग़ल के घेर के अन्दाज़ से या ३ ४ इंच बड़ा बनाना चाहिए ।

——:o:o:——

बोडीस ।

आजकल अङ्गरेज़ी काट की चीज़ों का बहुत शौक फैला हुआ देख कर बोडीस की काट छांट लिख दी जाती है । कपड़ा काटने के पहिले काग़ज़ पर नमूना काट ले । बोडीस के ठीक ठीक बनाने के लिये आगे और पीछे की काट में

कुछ अन्तर है इसलिये नीचे लिखे अनुसार ठीक ठीक नाप ले लेनी चाहिए। इसी नाप के अनुसार यदि नमूने काटे जांयगे तो बहुत ठीक होंगे। मान लो कि एक बोडीस ऐसी बनानी है कि जिसकी नाप नीचे लिखे अनुसार है।

पीछे के पल्ले के लिये नाप।

(१) गरदन की नाप ... ... (मान लो) १३ इंच।
(२) पीठ की चौड़ाई ... ... १३ "
(३) पीठ की लम्बाई ... ... १३ "
(४) पार्श्व की नाप अर्थात बगल से नीचे की लम्बाई ... ... ८ "
(५) कंधे की लम्बाई ... ... ५ "
(६) छाती की नाप ... ... ३७ "
(७) कमर ... ... २४ "

ये सब नाप लेकर बोडीस का पीछा कांटे। एक लम्बा चौड़ा कागज़ लेकर उसके ऊपर १० वा १२ इंच लम्बी सीधी लकीर बेड़ी दहने किनारे पर खींचदे, यही मानो सांचे का मूल हुआ। जैसा कि चित्र नं० ५५ में क ख है।

अब इस लकीर के सिरे क से नीचे को एक खड़ी सीधी लकीर क ग खींचो जो पीठ की लम्बाई से ½ इंच अधिक लम्बी हो (जिसमें गरदन की गोलाई छांट लेने पर भी लम्बाई कम न हो)।

अब क से नीचे पीठ की लम्बाई की चौथाई नाप पर प का चिन्ह बना दो और एक बेड़ी लकीर प ल खींचदो। इसी प्रकार ग से भी ग घ लकीर खींचो—यही मानो कमर का नमूना होगा।

कि रग से ऊपर पार्श्व की लम्बाई के बराबर द का चिन्ह बना दो और द म बेड़ी लकीर बना लो (स्मरण रहे कि यदि अङ्ग सुडौल है तो यह द चिन्ह पीठ की लम्बाई

चित्र नं० ५१
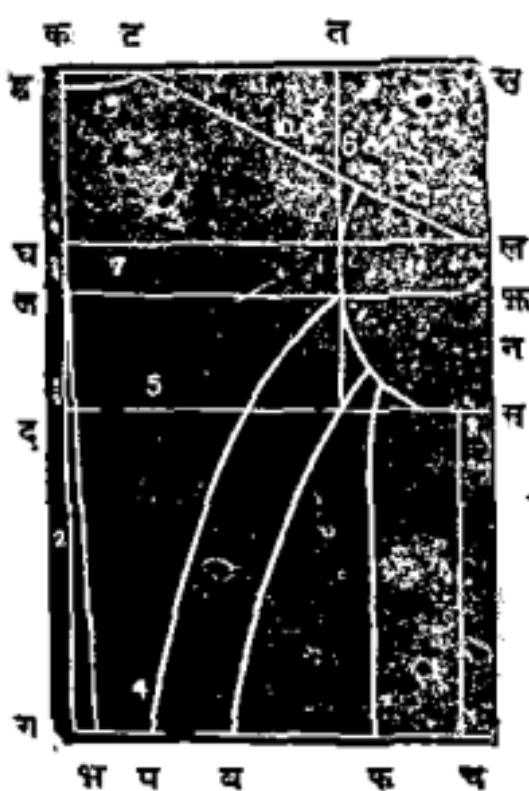
के ठीक बीच में पड़ेगा। यदि यह चिन्ह नीचे या ऊपर पड़े तो इसे जहां रखना हो ठीक करके इसी के अनुसार घ ल और ज झ को भी उतनाही नीचे ऊपर करना पड़ेगा)।

अब कख पर क से पीठ की चौड़ाई के आधे नाप पर त का चिन्ह दो और त से एक खड़ी लकीर त थ खींचो जो द म लकीर से थ पर जा मिले।

पड़ा काट लेने से दोनों बग़ल की काट एक सी आवेगी
ौर एकही घेर में दोनों बग़ल कपड़ा कट जायगा।

आगा।

अब आगे का पल्ला रहा उसके लिये नीचे लिखी
ाप लेवे।

(१) गरदन	(मान लो)	१३	इंच
(२) पार्श्व	"	८	"
(३) बग़ल	"	१५	"
(४) कंधे की लम्बाई ...	"	४½	"
(५) आगे की लम्बाई ...	"	१३	"
(६) छाती की नाप ...	"	३७	"
(७) कमर	"	२४	"
(८) आगे की कली ...	(dart)	५	"

पहिले एक दूसरे काग़ज़ के सिरे पर बेड़ी रेखा क ख १०
ा ११ इंच लम्बी खींच लो। इसी पर शेष ढांचा बनेगा।
क रेखा के बाएं सिरे क से क द दूसरी खड़ी रेखा नीचे
ा खींचो जो आगे की लम्बाई से३ इंच बड़ी हो कि जिस
३ इंच गरदन की गोलाई कट जाने पर भी लम्बाई ठीक
हे और द से द ब बेड़ी रेखा बना लो। पीठ की लम्बाई
½ नाप के बराबर क से ग का चिन्ह दो और ग घ बेड़ी
खा बनाओ (यह रेखा कंधे की ठीक ढाल लाने के लिये
)। याद रहे की अगले पल्ले के कंधे की ठीक ढाल पीछले
ल्ले की अपेक्षा कुछ ऊंची होती है। इसी प्रकार क से ३
च की दूरी पर च का चिन्ह बनाकर च छ रेखा खींच
ा। (मतलब यह कि द च अगले पल्ले की लम्बाई है) इसके

बाद एक रेखा ज झ ठीक उसी प्रकार की ओर नाप की बनावे जैसे पिछले पल्ले में बनाया है।

चित्र नं० ३१।

द थ रेखा से ऊपर की ओर जितनी ऊंची कली (Dart उतनी हो एक और रेखा त प बनाओ। ज झ रेखा पर म का चिन्ह उस जगह बनाओ जो छाती के पेट के चौथाई के बराबर हो और उससे नीचे को खड़ी लकीर म ब खींच दो।

क ल रेखा पर ल का चिन्ह बनाओ जो गरदन की नाप ⅓ (तिहाई) भाग से कुछ कम हो और च से ल च अ.रेख गोल रेखा बनाओ (यह गला हुआ) गले की गोलाई का दरा च ए रेखा पर च से कुछ थोड़े अन्दर ही बनेगा। ल से

एक आड़ी रेखा ल घ की ओर खींचो जो ३ इंच की हो और इसी में कंधे की लम्बाई के बराबर ल प का चिन्ह दे दो।

प से प म कंटियादार या अंकुड़ी के स्वरूप की वक्र रेखा बगल के काट की बना लो। बग़ल की काट पहिले तंग रखने में यह सुभीता होता है कि कपड़ा खड़ा करके नाप लेने पर जितनी तंग बग़ल हो उतनी छांट ज्यादा हो सकती है और अगर पहिले ही से ढीली बगल बनेगी तो उसका तंग करना कठिन हो जायगा।

छाती की गोलाई या उभारपन लाने के लिये यह करना चाहिए कि च छ पर जहां गले की गोलाई मिली है वहां से एक औरेबदार लकीर ऐसी बनाये कि वह औरेब घ द रेखा से ½ इञ्च तक बाहर को रहे।' छाती के उभार के अनुसार ही औरेब कमोवेश बनाये। आगे के पल्ले पर दो कलियां अगर बनाकर बोडिस को सुन्दर और चुस्त करना चाहे तो यह करे कि छाती की चौथाई नाप और कमर की चौथाई नाप मे जो फ़र्क है उसी के बराबर द से य का चिन्ह बना ले और य से एक आड़ी रेखा ऊपर को खींच कर त थ पर कहीं मिला दे। जहां यह मिले वहीं से खड़ी लकीर लम्ब-रूप बिन्दु बिन्दु के चिन्ह के समान बना ले और इस के दूसरी तरफ़ भी आड़ी रेखा उसी तरह बना ले जैसी पहिले बनाई गई है। ये दोनों आड़ी रेखाएं त्रिकोण रूप की कली होंगी। इसी तरह दूसरी कली भी उसके बग़ल में बना ले। ऐसी कलियां दोनों अगले पल्ले पर टांक लेने से बोडिस चुस्त और सुन्दर हो जाती है।

जब यह सांचा तयार हो जाय तब इसी के मुताबिक़ कपड़े के पल्ले काट कर बोडिस सीले। अगर दर्कार हो तो

ऊपर लिखे अनुसार आस्तीनें बनाकर उसमें जोड़ ले या नहीं तो बे आस्तीन की ही बोडिस कुरतीनुमा बना ले। नीचे दो चित्र बे आस्तीन के बोडिस के दे दिए जाते हैं—
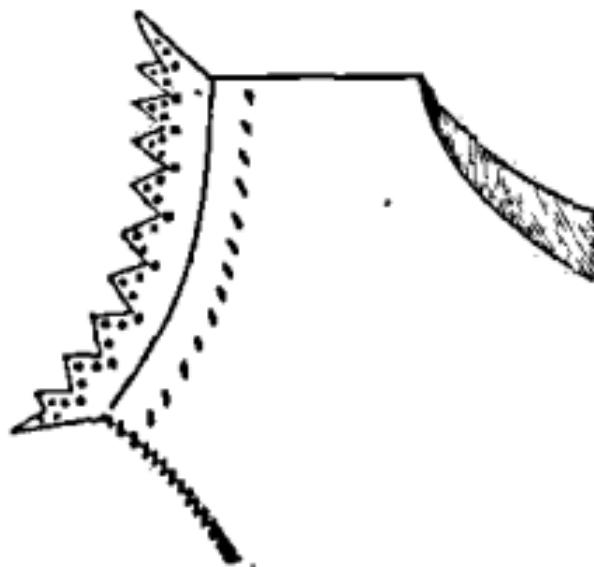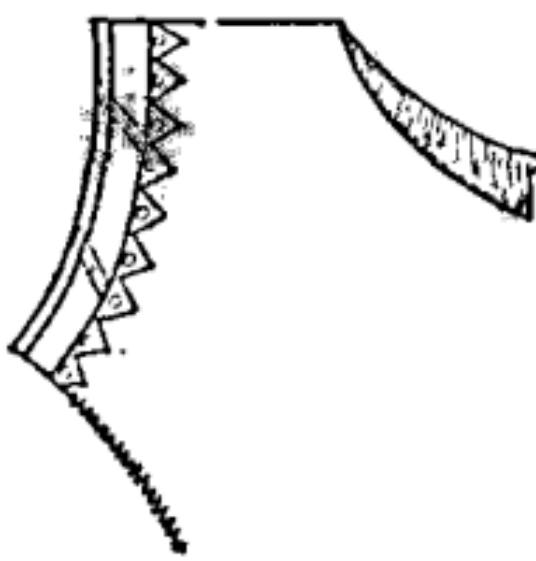
चित्र नं० १७

चित्र नं० १८

एक में झालर बाहर को बनी है और दूसरी चित्र में वही झालर पीछे को मोड़ कर अंदर ही कुर्ती के जोड़ों के साथ टांक दी गई है।

कुरती की काट का दूसरा ढंग।

नीचे के चित्र में जो चौख़ाने बने हैं वे मानो एक एक इंच के चौख़ाने हैं जिसमें कुरती की काट छांट घुमाव
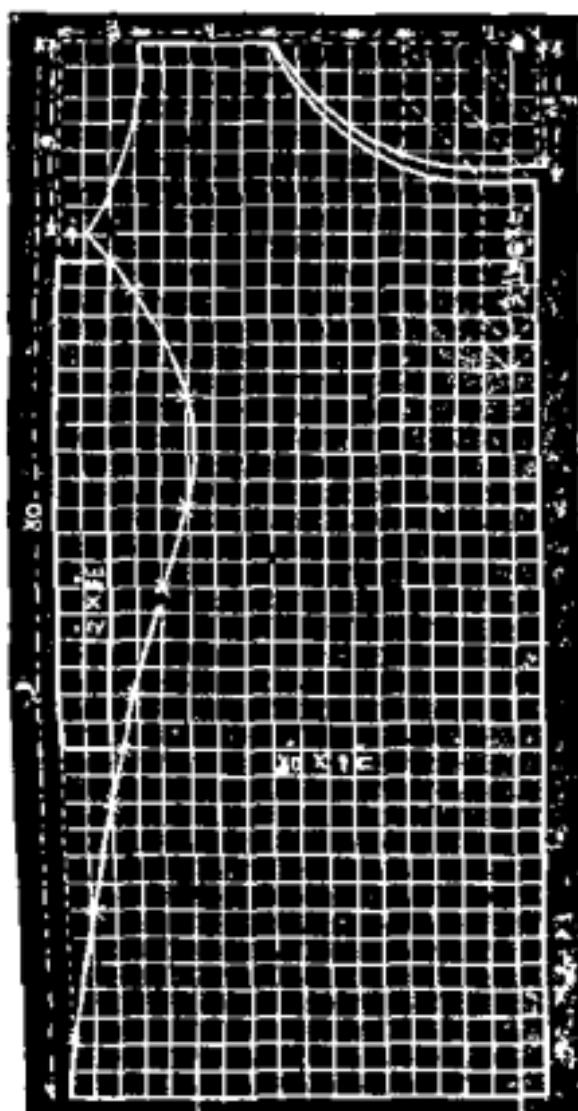
चित्र नं० ५९

वग़ैरः के कटाव का अंदाज़ा इस चित्र को देखते ही आजाय। जब कपड़े सीने का अच्छा अभ्यास हो जाता है तब बिना

सांचा बनाए भी कुरती वग़ैरः की काट अंदाज़ से की जा सकती है, लेकिन सांचे के मुताबिक़ कटी कुरती की खूबसूरती को नहीं पाती, फिर भी होशियार औरतें उसे बहुत कुछ ठीक बना लेती हैं। इसी बात का अभ्यास करने के लिये यह चित्र दे दिया जाता है। चित्र में कुरती की काट से बचे कपड़े में जो बेलबूटा चित्र बना है उससे यह दिखाया गया है कि बचे कपड़ों में से भी कई चीज़ें काम की बनाई जा सकती हैं, जैसे कालर इत्यादि बन सकता है। इसी तरह और भी जान लेना। कपड़े बनाने की जरूरी बातें बता दी गई हैं, अब सलाई से मोज़े, गुलूबन्द वग़ैरः बुनने की रीतियां लिखी जायंगी।

आठवां अध्याय।

सलाइयों द्वारा बुनाई।

सूत, रेशमी या ऊनी सूतों को गुथ कर करघा द्वारा कपड़े बनाने को बिनना कहते हैं, लेकिन जब सूतों को सलाइयों द्वारा गुथ कर गुलूबंद, मोज़ा इत्यादि बनाते हैं तो उसे बुनना कहते हैं। दो सलाइयों द्वारा सूत में फंदे बनाकर और उसमें उसी सूत के बाक़ी हिस्से को गुथते जाना ही बुनना कहाता है। बुनाई के लिये ऊन के धागे या ऐसे सूती धागे काम में लाए जाते हैं जो कम बटे और लचदार होते हैं, याने जो फैल या सुकड़ सकते हैं, ऐसे सूत को बरा सूत भी कहते हैं।

आम तौर से सलाइयों द्वारा ऊन की चीज़ें ज़्यादा बुनी जाती हैं, लेकिन पैर के मोज़े, टोपियां इत्यादि सूत की भी बुनी जाती हैं। धागे लचदार होने से चीज़ें ख़ूब सूरत बनती हैं। जिन सलाइयों से चीज़ें बुनी जाती हैं वे लोहे या हाथी-दांत अथवा हड्डी या लकड़ी की होती हैं और उनके दोनों सिरे साफ़ होते हैं, अर्थात उनपर घुंडियां या नाके नहीं बने रहते। ये सलाइयां मोटी और पतली ९ तरह की होती हैं और उनके द्वारा बुनने के लिये सूतों की क़िस्में भी अलग अलग होती हैं। नीचे लिखे नक़्शे में सूतों के कुछ नं० दे दिए जाते हैं कि जिसके देखने से बालिकाओं को ठीक ठीक सूत लगाने में सुभीता पड़े।

	सलाई नं० ९	सलाई नं० १०	सलाई नं० ११	सलाई नं० १२	सलाई नं० १३	सलाई नं० १४	सलाई नं० १५	सलाई नं० १६	सलाई नं० १७
काटन अ ट्रिकाटर	६-८	८-१०	१० १२	१४ १६	१८-२०	२०-२४	२४-३०	३०-३६	४० ५०
काटन अ क्राचे	६	८	१०	१०-१२	१२-१६	१६ १८	१२ २०	३०	४०
कार होने ६ फिल	३-४	४-५	४-५	२१	१०-१५	२० २४	२४ ३०	४०-५०	५०-७०
फिल अ पैरहर	१०	१५	२० ३०	२१-१०	—	—	—	—	—
फिल अ हेटिल	—	—	—	२४	२४-३०	३० ३५	३५ ४०	४०-५०	५०-७०

कोई चीज़ बुनने के पहिले सूत या ऊन की लच्छी खोलकर उसकी पिंडी बना लेनी चाहिए। पिंडी के ऊपरी

सिरे से एक बालिश्त पर आधी गांठ देकर पिंडी
दे कि जिससे पिंडी खुलने न पावे। फिर दो सलाइ
एक को बाएं हाथ की हथेली के नीचे अंगूठे और उंग
से थामे और दूसरी सलाई को दहिने हाथ में इस

चित्र नं० ६०

पकड़े रहे जैसे क़लम पकड़ी जाती है। चित्र नं०६० देखो।
बाद धागे के सिरे पर एक छोटी सी ढेढ़ गांठ की सी
लगादे और इस गांठ को बांए हाथ की सलाई पर
दे और धागे की पिंडी के तरफ़ के हिस्से को दहिने
की उंगलियों पर इस तरह अटकाए रहे जैसा कि
नं० (६०) में दिखाया गया है।

बुनना शुरु करने के पहिले बाईं हाथ की सलाई
ज़ंजीरे डालना होता है—इसी ज़ंजीरों पर बुनाई की जा
है। ज़ंजीरे कई तरह के डाले जाते हैं। लेकिन हम
एक ही तरीका बताएंगे जो आम तौर से काम में ला
जाता है।

बुनावट करने की मुख्य दो रीतियां हैं जिसे साधारण में सीधी और उलटी बुनावट बोलते हैं, लेकिन यह नाम ग़लत है, उनका ठीक नाम (१) सादी बुनावट और (२) गुथदार बुनावट होना चाहिए। हम इन बुनावटों को इन्हीं सही नामों से लिखेंगे, हमारे ऐसा करने का मतलब और सबब आगे चलकर आपही खुल जायगा।

इन सादी और गुथदार बुनावट की एक पंक्ति खतम करके जब दूसरी पंक्ति बुनने लगते हैं तब बुनने की रीति नलट दी जाती है। अगर इस तरफ़ भी उसी तरह बुनेंगे तो एक पंक्ति की बुनावट एक प्रकार की और दूसरी पंक्ति की दूसरी तरह की हो जायगी। सब पंक्तियां एक ही तरह की आवें इसलिये बुनने का क्रम बदलते रहना पड़ता है याने हर दूसरी पंक्ति के बुनने का क्रम एक दूसरे से उलटा होता है इसलिये यह ज़रूरी हुआ कि नाम ठीक कर दिया जाय।

जैसा हमने ऊपर बताया है कि बुनावट मुख्य रूप से दो तरह की होती हैं, याने सादी और गुथदार, इनके बुनने की रीति का नाम सीधी तर्ज़ हुआ, और जब एक सलाई पर पूरे फंदे लेकर दूसरी पंक्ति के फंदे लेने के लिये दहिने हाथ में लेते हैं और बुनाई करते हुए फिर उसी तरफ़ को लौटते हैं जिधर से इसके पहिले बुनाई शुरू की थी, तब बुनाई को उलटा बुनते हैं। अगर ऐसा न किया जाय तो एक पंक्ति के फंदे एक क़िस्म के और दूसरी पंक्ति के फंदे दूसरी शकल के बन जांयगे, हर पंक्ति के फंदे एक तरह के ही इसलिये हर पंक्ति की बुनावट के तर्ज़ को उलटा बुनते

हैं, इसका नाम उलटी बुनावट ठीक है। अब हम बुनावटों की रीतियां लिखी जाती हैं।

ज़ंजीरें डालना।

धागे के सिरे पर डेढ़ गांठ का फंदा बनाकर उसे बांए हाथ की सलाई पर पहरा दे, फिर दहिने हाथ

चित्र नं० ६१

की सलाई की नोक को उस फंदे में पीछे से डालकर आगे को निकाले। दहनी सलाई बांई सलाई के नीचे

चित्र नं० ६२
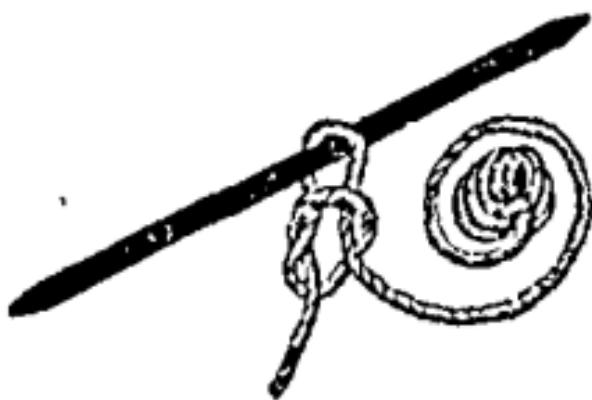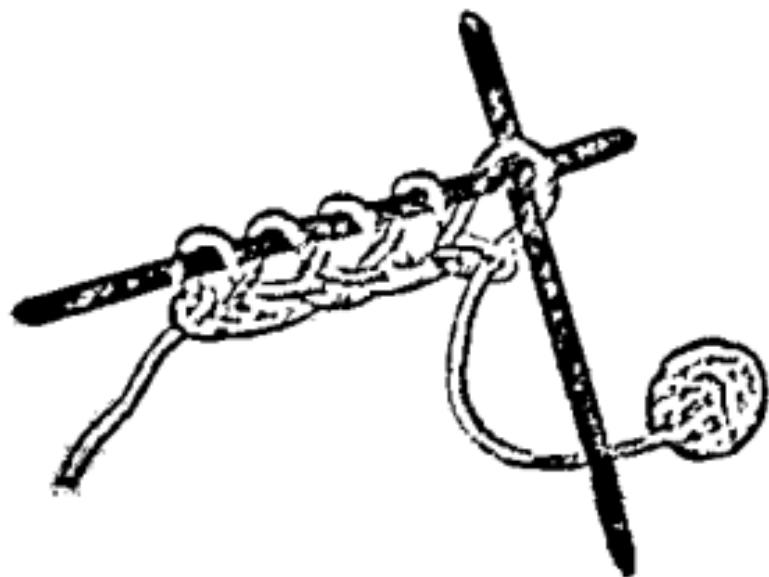
रहे। अगर फंदे का मुंह बहुत ज्यादा खुला हो तो उसे छोटा कर ले। अब धागे की लम्बी डोर से दहिनी सलाई के ऊपर से एक लपेट दे और इस लपेटे हुए डोर को सलाई की नोक से खींच कर फंदे में से निकाल ले अर्थात् पहिले फंदे में दूसरा फंदा बनाले-यह फंदा जो दहिनी सलाई पर है इसे बांई सलाई पर पहिरा दे, अब बांई सलाई पर दो फंदे होगए। इसी तरह जितनी चौड़ी चीज़ बनानी हो उतने ही चौड़ाम में फंदे बना जाय। इसी को ज़ंजीरा डालना बोलते हैं। अब इसी पर बुनाई शुरू की जायगी। ज़ंजीरे कई तरह के होते हैं लेकिन बालिकाओं के लिये और सामान्य चीजें बनाने के लिये यही एक काफ़ी है।

सादी बुनावट सीधी।

जब पूरे ज़ंजीरे डाल दिए जांय और जब दूसरी पंक्ति की बुनावट शुरू की जाय तब आखिर फंदे को जो
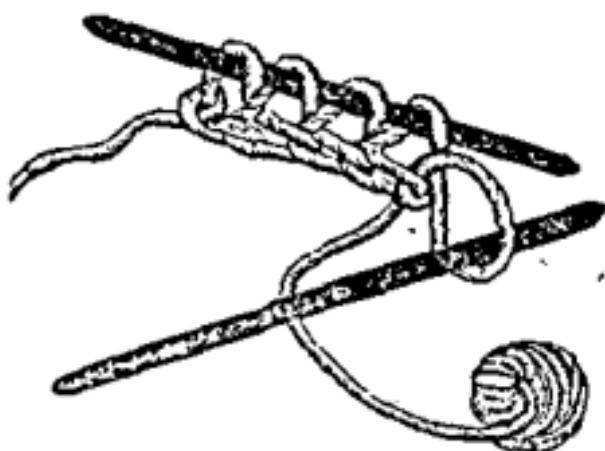
चित्र नं० ६१

दहिनी सलाई पर बना है बांई सलाई पर नहीं चढ़ाते हैं,

यलके उसी पर रहने देते हैं और दहिनी सलाई के सिरे
को बांई सलाई पर के आख़िरी फंदे में पीछे से डालकर
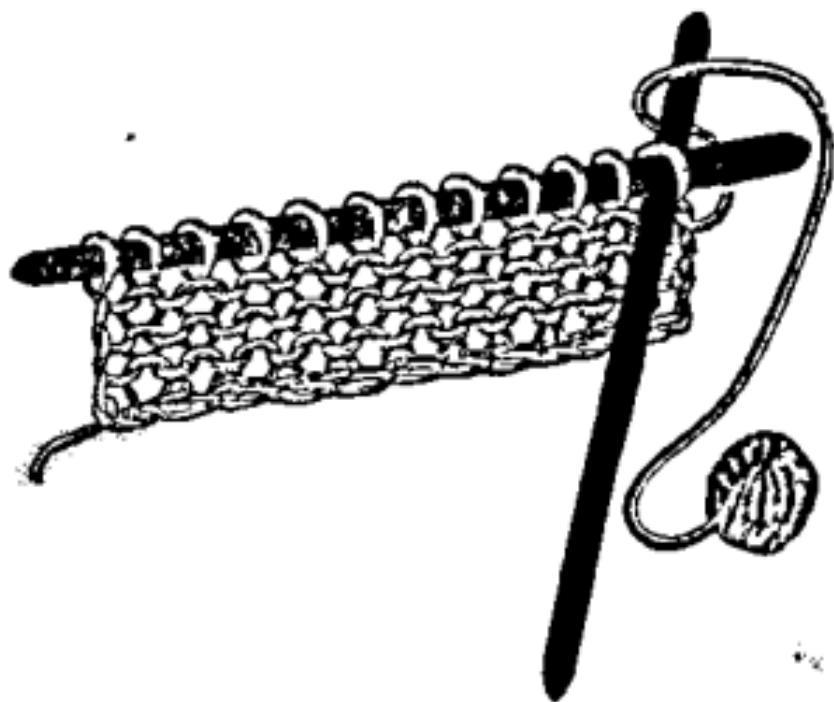
चित्र नं० ६४

उसके नीचे से लम्बी डोर को बांई तरफ़ से सलाई के ऊपर
दहिनी तरफ़ को लपेट देते हैं किंवा डोर को सलाई के नीचे
की तरफ़ तान कर फैला देते हैं और फिर सलाई की नोक
द्वारा उसे खींच कर दूसरा फंदा दहिनी सलाई पर बना
लेते हैं। इसके बाद उस फंदे को जिसमें से यह पिछला
फंदा बना है बांई सलाई पर से सरका कर गिरा देते हैं।
इसी तरह दहिनी सलाई पर नए नए फंदे बढ़ाते जाते
हैं और बांई सलाई पर के फंदे छुड़ाते जाते हैं। यह
सादी बुनावट की सीधी बुनाई हुई।

जब बांई सलाई के सब फंदे उतर गए और दहिनी
सलाई पर नए फंदे बन गए, तब दहिनी सलाई को बांए
हाथ में और बांई सलाई को दहिने हाथ में ले लेना

चाहिए। इसका मतलब यह है कि फंदे वाली सलाई हमेशा बांए हाथ में रहे और बुनने वाली सलाई दहिने हाथ में, ऐसा करने से फंदों का रूख पलट जायगा, याने आगे का पीछे और पीछे का आगे हो जायगा, इसलिये अब जो बुनाई की जायगी वह पहिली रीति की उलटी तर्ज़ से की जायगी कि जिसमें फंदे सब के एक समान ही रहें। खयाल रखने की बात है कि पहिले धागे की डोर जो आगे को लटकी रहती थी वह अब पीछे को लटकती है।

उलटी सादी बुनावट।

उलटी सादी बुनावट का तरीक़ा यह है कि दहिनी सलाई की नोक को बांई सलाई पर के एक फंदे में पिछले लड़ के पीछे से डालकर उस फंदे में अगले लड़ को दबाती हुई पिछले लड़ के बगल से फिर पीछे निकाल ली जाय और धागे या ऊन की लम्बी डोर को (जो पीछे लटक रही है) सलाई की नोक के ऊपर से इस तरह लपेट दे कि डोर दहिनी तरफ़ से बांई तरफ़ घूम जाय, याने सलाई की नोक पर पीछे से आगे को लपेट पड़े। इसके बाद बांए हाथ की उंगली की नोक और सूई की नोक से धागा दबाकर नया फंदा दहिनी सलाई पर उठा ले और बांई सलाई पर से फंदा छुड़ा दे। ऐसा ही करती जाय तो इस पंक्ति की बुनावट एक ही तरफ़ पहिली तर्ज़ की सी हो जायगी।

इसकी बुनावट इस तरह की जाती है कि दहिनी सलाई को बांई सलाई के एक फंदे में आगे से पीछे को डालकर उस पर धागा नीचे से बांई तरफ से लाकर ऊपर दहिनी तरफ को लपेट दे और सूई की नोक और उंग-

हैं, इस तर्ज़ का गुलुबंद सुंदर होता है। गुथदार बुनावट की उलटी बुनाई में धागा दहिनी तरफ़ से बांई तरफ़ को सलाई पर लपेट कर फंदा बनाया जाता है।

बुनाई की समाप्ति।

जब चीज़ पूरी तरह से कुल बुन जाय तब आख़री पंक्ति को इस तरह बुनकर बुनाई समाप्त करते हैं कि दाहिनी सलाई पर एक फंदा रखकर बांई सलाई पर के आख़री फंदे से सादा या गुथदार फंदा बनाकर दहिनी सलाई पर दो फंदे कर लेते हैं और इन दोनों फंदों में से पिछले फंदे को बांई सलाई की नोक चढ़ाकर अगले फंदे
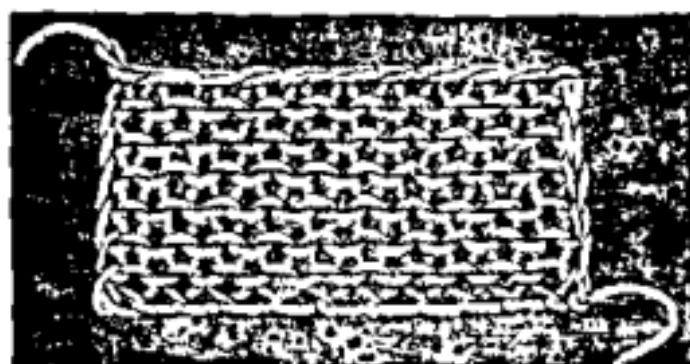
चित्र नं० ६७

पर से दहिनी सलाई की नोक के आगे लाकर बांई सलाई पर से इसे सरका कर छुड़ा देते हैं जिसमें दहिनी सलाई के फंदे पर एक फांस पड़ जाय। दहिनी सलाई पर अब एक ही फंदा रह गया। अब बांई सलाई पर के आख़री फंदे से दूसरा फंदा (सादा या गुथदार जैसी कि बुनावट शुरू से की जा रही है) बना ले और इस नए फंदे के ऊपर से पिछले फंदे को लाकर फिर छुड़ा दे। इसी तरह अन्तिम

फंदे तक कर जाय, जब बाईं सलाई पर से सब फं
उतर जांय और दहिनी सलाई पर एकही आख़री फंदा
रह जाय तब धागे की डोर को काट दे और उसके
आख़री सिरे को उस फंदे में से परो कर फंदा कस दे और
धागे के सिरे से गांठ लगा दे।

कभी कभी कपड़े की चौड़ाई बढ़ाने के लिये फंदे
बढ़ाने पड़ते हैं और कभी चौड़ाई घटाने के लिये क्रम से
हर पंक्तियों में फंदे घटाने पड़ते हैं, या कभी कभी जाली-
दार बुनावट भी करनी पड़ती है, इन सभों का वर्णन इस
ग्रंथ के दूसरे भाग में लिखा जायगा। मामूली तौर से गुलबंद,
या रूमाल वगैरः बुन लेने के लिये इतनाही काफ़ी है
अलबत्ता मोज़े, कुर्तियां वगैरः बनाने के लिये फंदे घटाने
और बढ़ाने पड़ते हैं और कभी कभी तीन सलाइयों की
ज़रूरत पड़ा करती हैं। ये सब विधियां बालिकाओं के
लिये कठिन हैं इस लिये यही उचित जान पड़ता है कि
इन बातों को दूसरे भाग में सविस्तर लिखा जाय और
चित्रों द्वारा खूब समझा दिया जाय।

जो कुछ इस ग्रंथ में अब तक लिखा गया है वह एक
मामूली घर गृहस्थी के काम के लिये काफ़ी है। इस तरह
तो अंकुड़ीदार सलाई द्वारा बुनावट करने की भी एक
रीति है, इसमें तो आम तौर से एकही सलाई से काम
चल जाता है, लेकिन ये सब बातें दूसरे भाग के लिये
छोड़ दी गई हैं।

[इति।]